सूरतुल मुजादिल:-५८

سُوْرَةُ الْمُجَادَلَةِ

सूर: मुजादिल: मदीना में नाज़िल हुई और इस में बाईस आयतें और तीन रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. निश्चय (यक़ीनन) अल्लाह (तआला) ने उस औरत की बात सुनी जो तुझ से अपने पति के बारे में विवाद (तकरार) कर रही थी और अल्लाह के सामने शिकायत कर रही थी, अल्लाह (तआला) तुम दोनों की बातचीत (वाद-विवाद) सुन रहा था।[1] बेशक अल्लाह (तआला) सुनने देखने वाला है।

قَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّتِيْ تُجَادِلُكَ فِيْ زَوْجِهَا وَتَشْتَكِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ۖ وَاللّٰهُ يَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَا ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ①

२. तुम में से जो लोग अपनी पत्नियों से ज़िहार करते हैं (यानी उन्हें मां कह बैठते हैं) वह हक़ीक़त में उनकी मातायें नहीं हैं, उनकी मातायें तो वही हैं जिन के गर्भ से उन्होंने जन्म लिया है,[2] बेशक ये लोग एक अनुचित (मुन्कर) और झूठी बात कहते हैं। बेशक अल्लाह (तआला) क्षमाशील (बख़्शने वाला) और माफ़ करने वाला है।

اَلَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْكُمْ مِّنْ نِّسَاۗىِٕهِمْ مَّا هُنَّ اُمَّهٰتِهِمْ ۭ اِنْ اُمَّهٰتُهُمْ اِلَّا الّٰۗـِٔيْ وَلَدْنَهُمْ ۭ وَاِنَّهُمْ لَيَقُوْلُوْنَ مُنْكَرًا مِّنَ الْقَوْلِ وَزُوْرًا ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ②

---

[1] यह इशारा है हज़रत ख़ौल: ﵂ की घटना (वाक़ेआ) की तरफ़, जिन के पति हज़रत औस पुत्र सामित ने उन से ज़िहार कर लिया था, ज़िहार का मायने है अपनी पत्नी (बीवी) से कह देना «أَنْتِ عَلَيَّ كَظَهْرِ أُمِّي» (तू मुझ पर मेरी मां की पीठ के बराबर है) जेहालत के दौर में ज़िहार को तलाक़ (विवाह-विच्छेद) समझा जाता था। हज़रत ख़ौल: बहुत परेशान हुईं, उस समय तक इस बारे में कोई हुक्म नहीं उतरा था, इसलिए वह नबी ﷺ के पास आयीं तो आप भी कुछ रूके रहे, वह आप से झगड़ा और तकरार करती रहीं जिस पर यह आयतें उतरीं, जिन में ज़िहार की समस्या (सूरत) और उसका हुक्म और प्रायश्चित (कफ़्फ़ारा) को बयान कर दिया गया। (अबू दाऊद, किताबुत्तलाक़)

[2] यह ज़िहार का हुक्म बताया कि तुम्हारे कह देने से तुम्हारी पत्नी (बीवी) तुम्हारी मां नहीं बन जायेगी।

३. और जो लोग अपनी पत्नियों से ज़िहार करें फिर अपनी कही हुई बात वापस लें तो उन के ऊपर आपस में एक-दूसरे को हाथ लगाने से पहले एक दास (गुलाम) को आज़ाद करना है, इस के ज़रिये तुम उपदेश (नसीहत) दिये जाते हो और अल्लाह (तआला) तुम्हारे सभी अमलों को जानता है।

وَالَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْ نِّسَآىِٕهِمْ ثُمَّ يَعُوْدُوْنَ لِمَا قَالُوْا فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّتَمَآسَّا ؕ ذٰلِكُمْ تُوْعَظُوْنَ بِهٖ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ③

४. हाँ, जो इंसान न पाये तो उस के ऊपर दो महीने का लगातार रोज़ा है इस से पहले कि एक-दूसरे को हाथ लगायें, और जिस इंसान की यह भी ताक़त न हो उस पर साठ ग़रीबों को खाना खिलाना है, यह इसलिए कि तुम अल्लाह पर और उस के रसूल पर ईमान लाओ। यह अल्लाह (तआला) की मुक़र्रर की हुई सीमायें (हदें) हैं और काफ़िरों के लिए ही दुखदायी अज़ाब है।

فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّتَمَآسَّا ۚ فَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ فَاِطْعَامُ سِتِّيْنَ مِسْكِيْنًا ؕ ذٰلِكَ لِتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ؕ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ؕ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ④

५. बेशक जो लोग अल्लाह और उस के रसूल की मुख़ालफ़त करते हैं वे अपमानित (ज़लील) किये जायेंगे, जैसे उन से पहले के लोग ज़लील किये गये,[1] और बेशक हम खुली आयतें नाज़िल कर चुके हैं और काफ़िरों के लिए ज़लील करने वाला अज़ाब है।

اِنَّ الَّذِيْنَ يُحَآدُّوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ كُبِتُوْا كَمَا كُبِتَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَقَدْ اَنْزَلْنَآ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ؕ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ⑤

६. जिस दिन अल्लाह (तआला) उन सब को उठायेगा, फिर उन्हें उन के किए हुए अमल से बाख़बर करायेगा, (जिसे) अल्लाह ने गिन रखा है और जिसे ये भूल गये थे[2] और अल्लाह (तआला) हर चीज़ से अवगत (बाख़बर) है।

يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ؕ اَحْصٰىهُ اللّٰهُ وَنَسُوْهُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ⑥

---

[1] इस से अभिप्राय (मुराद) पिछली क़ौमें हैं जो इसी मुख़ालफ़त की वजह से बरबाद हो गई।

[2] यह दिल में पैदा होने वाले शक का जवाब है कि पापों की इतनी अधिकता और इतने रूप हैं कि उनकी गिनती ज़ाहिरी तौर से नामुमकिन है। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि तुम्हारे लिए बेशक नामुमकिन है, बल्कि तुम्हें तो अपने किये सब कर्म भी याद नहीं होंगे, लेकिन यह अल्लाह के लिए कोई कठिन नहीं, उस ने एक-एक का कर्म सुरक्षित (महफ़ूज़) कर रखा है।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مَا يَكُونُ مِن نَّجْوَىٰ ثَلَٰثَةٍ إِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ إِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَا أَدْنَىٰ مِن ذَٰلِكَ وَلَا أَكْثَرَ إِلَّا هُوَ مَعَهُمْ أَيْنَ مَا كَانُوا ثُمَّ يُنَبِّئُهُم بِمَا عَمِلُوا يَوْمَ الْقِيَٰمَةِ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ⑦

७. क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह आकाशों और धरती की हर चीज़ जानता है, तीन इंसानों की कानाफूसी नहीं होती, लेकिन अल्लाह उनका चौथा होता है और न पांच की लेकिन वह उनका छठा होता है और न उस से कम की और न ज़्यादा की, लेकिन वह उन के साथ ही होता है जहाँ भी वे हों फिर क़यामत (प्रलय) के दिन उन्हें उन के अमल से बाख़बर करायेगा, बेशक अल्लाह (तआला) हर चीज़ का जानकार है।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ نُهُوا عَنِ النَّجْوَىٰ ثُمَّ يَعُودُونَ لِمَا نُهُوا عَنْهُ وَيَتَنَٰجَوْنَ بِالْإِثْمِ وَالْعُدْوَٰنِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُولِ وَإِذَا جَاءُوكَ حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحَيِّكَ بِهِ اللَّهُ وَيَقُولُونَ فِي أَنفُسِهِمْ لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللَّهُ بِمَا نَقُولُ حَسْبُهُمْ جَهَنَّمُ يَصْلَوْنَهَا فَبِئْسَ الْمَصِيرُ ⑧

८. क्या तूने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें कानाफूसी से रोक दिया गया था? वे फिर भी उस मना किये हुए काम को दोबारा करते हैं,[1] और आपस में पाप की और नाइंसाफ़ी की और रसूलों की नाफ़रमानी की, कानाफूसियां करते हैं और जब तेरे पास आते हैं तो तुझे उन शब्दों (लफ़्ज़ों) में सलाम करते हैं, जिन शब्दों में अल्लाह (तआला) ने नहीं कहा, और अपने दिल में कहते हैं कि अल्लाह (तआला) हमें हमारे इस कहने पर सज़ा क्यों नहीं देता? उन के लिए नरक (दण्ड) काफ़ी है, जिसमें ये जायेंगे[2] तो वह कितना बुरा ठिकाना है।

[1] इस से मदीने के यहूदी और मुनाफ़िक़ मुराद हैं, जब मुसलमान उन के पास से गुज़रते तो यह आपस में सिर जोड़ कर ऐसे कानाफूसी करते कि मुसलमान समझते कि शायद उन के ख़िलाफ़ कोई षड़यंत्र (साज़िश) रच रहे हैं, या मुसलमानों की किसी सेना पर हमला करके दुश्मन ने नुक़सान पहुँचाया है, जिसकी ख़बर उन्हें मिल गई है। मुसलमान इन बातों से डर जाते, इसलिए नबी ﷺ ने इस तरह की कानाफूसियों से रोक दिया, लेकिन कुछ ही समय बाद उन्होंने फिर यह बुरा काम शुरू कर दिया, आयत में उन के इसी काम की चर्चा की जा रही है।

[2] अल्लाह ने फ़रमाया कि अगर अल्लाह ने अपनी इच्छा और हिक्मत की वजह से दुनिया में तुरन्त पकड़ नहीं की तो क्या वह आख़िरत में भी नरक के अज़ाब से बच जायेंगे? नहीं, निश्चय (यक़ीनन) नहीं, नरक उन के इंतेज़ार में है जिस में वह दाख़िल होंगे।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ إِذَا تَنَٰجَيْتُمْ فَلَا تَتَنَٰجَوْا۟ بِٱلْإِثْمِ وَٱلْعُدْوَٰنِ وَمَعْصِيَتِ ٱلرَّسُولِ وَتَنَٰجَوْا۟ بِٱلْبِرِّ وَٱلتَّقْوَىٰ ۖ وَٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ ٱلَّذِىٓ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ⑨

९. हे ईमानवालो! तुम जब कानाफूसी करो तो ये कानाफूसी पाप, उद्दण्डता (सरकशी) और रसूल की नाफ़रमानी की न हो, बल्कि नेकी और तक़्वा की बातों पर कानाफूसी करो, और उस अल्लाह से डरते रहो जिस के पास तुम सब जमा किये जाओगे।

إِنَّمَا ٱلنَّجْوَىٰ مِنَ ٱلشَّيْطَٰنِ لِيَحْزُنَ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَلَيْسَ بِضَآرِّهِمْ شَيْـًٔا إِلَّا بِإِذْنِ ٱللَّهِ ۚ وَعَلَى ٱللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ ٱلْمُؤْمِنُونَ ⑩

१०. (बुरी) कानाफूसी शैतान का काम है, जिस से ईमानवालों को दुख हो,[1] यद्यपि (अगरचे) अल्लाह तआला की मर्ज़ी के बिना वह उन्हें कोई नुक़्सान नहीं पहुँचा सकता, और ईमानवालों को चाहिए कि अल्लाह ही पर भरोसा रखें।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ إِذَا قِيلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوا۟ فِى ٱلْمَجَٰلِسِ فَٱفْسَحُوا۟ يَفْسَحِ ٱللَّهُ لَكُمْ ۖ وَإِذَا قِيلَ ٱنشُزُوا۟ فَٱنشُزُوا۟ يَرْفَعِ ٱللَّهُ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ مِنكُمْ وَٱلَّذِينَ أُوتُوا۟ ٱلْعِلْمَ دَرَجَٰتٍ ۚ وَٱللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ⑪

११. हे ईमानवालो ! जब तुम से कहा जाये कि सभाओं (मजलिसों) में तनिक खुल कर बैठो, तो तुम जगह कुशादा कर दो,[2] अल्लाह (तआला) तुम्हें कुशादगी (विस्तार) अता करेगा, और जब कहा जाये कि उठकर खड़े हो जाओ, तो तुम उठकर खड़े हो जाओ, अल्लाह (तआला) तुम में से उन लोगों के जो ईमान लाये हैं और जो इल्म दिये गये हैं पद ऊँचे कर देगा,[3] और अल्लाह

---

[1] गुनाह, बुरे काम और रसूल ﷺ की नाफ़रमानी पर आधारित (मबनी) कानाफूसियाँ शैतानी काम हैं, क्योंकि शैतान ही इन पर उकसाता है ताकि वह इस के द्वारा मोमिनों को दुखी और शोकग्रस्त (ग़मगीन) कर दे।

[2] इस में मुसलमानों को सभा के शिष्टचार (आदाब) बताये जा रहे हैं। मजलिस शब्द आम है जो हर उस मजलिस को शामिल है जिस में मुसलमान भलाई और नेकी हासिल करने के लिए जमा हों, शिक्षा-दिक्षा (तालीम-नसीहत) के लिये मजलिस हो या जुमा की हो। (तफ़सीर अल कुर्तबी) "खुल कर बैठो" का मतलब है कि सभा (मजलिस) का दायरा कुशादा रखो ताकि बाद में आने वालों के लिये भी जगह मिले। दायरा तंग न रखो कि जो बाद में आये खड़ा रहे या दूसरे को हटाकर अपनी जगह बनाये, यह दोनों बातें मुनासिब नहीं हैं। जैसे कि नबी ﷺ ने फ़रमाया कि कोई इंसान दूसरे को हटाकर उस जगह पर न बैठे, इसलिए मजलिस का दायेरा कुशादा कर लो। (सहीह बुख़ारी, किताबुल जुमअः, बाबु मुस्लिम, किताबुस सलाम)

[3] यानी ईमान वालों के दर्जे ईमान न लाने वालों पर और ज्ञानियों (आलिमों) के दर्जे अज्ञानियों (जाहिलों) पर ऊँचा करेगा। जिसका मतलब यह हुआ कि ईमान के साथ धार्मिक ज्ञान (इल्म) की जानकारी दर्जे को ज़्यादा ऊँचा करती है।

(तआला) (हर उस काम को) जो तुम कर रहे हो (अच्छी तरह) जानता है।

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نَاجَيْتُمُ الرَّسُوْلَ فَقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوٰىكُمْ صَدَقَةً ؕ ذٰلِكَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَاَطْهَرُ ؕ فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿12﴾

१२. हे मुसलमानो! जब तुम रसूल से अकेले में बात करना चाहो, तो अपनी इस अकेले में बात करने से पहले कुछ दान (सदक़ा) कर दिया करो, यह तुम्हारे हक़ में अच्छा और पाक है, हाँ, अगर न पाओ तो बेशक अल्लाह (तआला) माफ़ करने वाला रहम करने वाला है।

ءَاَشْفَقْتُمْ اَنْ تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوٰىكُمْ صَدَقٰتٍ ؕ فَاِذْ لَمْ تَفْعَلُوْا وَتَابَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿13﴾

१३. क्या तुम अपनी अकेले की बातों (काना-फूसी) से पहले दान (सदक़ा) करने से डर गये तो जब तुम ने यह न किया और अल्लाह (तआला) ने भी तुम्हें माफ़ कर दिया तो अब (सही तरीक़े से) नमाज़ों को क़ायम रखो, ज़कात देते रहा करो और अल्लाह (तआला) और उस के रसूल के हुक्म का पालन (पैरवी) करते रहो और तुम जो कुछ भी करते रहो उन सब से अल्लाह (अच्छी तरह) परिचित (बाख़बर) है।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ؕ مَا هُمْ مِّنْكُمْ وَلَا مِنْهُمْ ۙ وَيَحْلِفُوْنَ عَلَى الْكَذِبِ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿14﴾

१४. क्या तूने उन लोगों को नहीं देखा जिन्होंने उस समुदाय (क़ौम) से दोस्ती की जिन पर अल्लाह नाराज़ हो चुका है, न ये (भ्रष्टाचारी) तुम्हारे ही हैं न उन के हैं, और इल्म होने के बावजूद भी झूठ पर क़समें खा रहे हैं।

اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ؕ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿15﴾

१५. अल्लाह (तआला) ने उन के लिए कठोर अज़ाब तैयार कर रखा है, यक़ीनी तौर से जो कुछ ये कर रहे हैं बुरा कर रहे हैं।

اِتَّخَذُوْٓا اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿16﴾

१६. इन लोगों ने तो अपनी क़समों को ढाल बना रखा है[1] और लोगों को अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं तो उन के लिए अपमानकारी अज़ाब है।

[1] أَيمان (ऐमान) يَمِين (यमीन) का बहुवचन (जमा) है, मायने है क़सम। यानी जैसे ढाल से दुश्मन के हमले को रोक कर अपना बचाव कर लिया जाता है, इसी तरह उन्होंने अपनी क़समों को मुसलमानों की तलवार से बचने के लिए ढाल बना रखा है।

१७. उनका माल और उनकी औलाद अल्लाह के सामने कुछ काम न आयेगी, यह तो नरक में जाने वाले हैं, हमेशा ही उस में रहेंगे।

لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَآ أَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ۗ أُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ النَّارِ ۗ هُمْ فِيهَا خٰلِدُونَ ⑰

१८. जिस दिन अल्लाह (तआला) उन सबको उठा खड़ा करेगा तो यह जिस तरह तुम्हारे सामने क़सम खाते हैं, अल्लाह (तआला) के सामने भी क़सम खाने लगेंगे और समझेंगे कि वे भी किसी (दलील) पर हैं, यक़ीन करो कि बेशक वही झूठे हैं।

يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيعًا فَيَحْلِفُونَ لَهُۥ كَمَا يَحْلِفُونَ لَكُمْ ۖ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ عَلٰى شَىْءٍ ۚ أَلَآ إِنَّهُمْ هُمُ الْكٰذِبُونَ ⑱

१९. उन पर शैतान ने प्रभाव (ग़लबा) हासिल कर लिया है[1] और उन्हें अल्लाह की याद से भुला दिया है, ये शैतान की सेना है। सुनो! शैतान की सेना ही नुक़सान उठाने वाली है।

اسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطٰنُ فَأَنسٰىهُمْ ذِكْرَ اللّٰهِ ۚ أُولٰٓئِكَ حِزْبُ الشَّيْطٰنِ ۚ أَلَآ إِنَّ حِزْبَ الشَّيْطٰنِ هُمُ الْخٰسِرُونَ ⑲

२०. बेशक अल्लाह (तआला) का और उस के रसूल का जो लोग विरोध करते हैं,[2] वही लोग सब से ज़्यादा अपमानितों (ज़लीलों) में हैं।

إِنَّ الَّذِينَ يُحَآدُّونَ اللّٰهَ وَرَسُولَهُۥٓ أُولٰٓئِكَ فِى الْأَذَلِّينَ ⑳

२१. अल्लाह (तआला) लिख चुका है कि बेशक मैं और मेरे रसूल ग़ालिब (विजयी) रहेंगे। बेशक अल्लाह तआला ताक़तवर और ग़ालिब (प्रभावशाली) है।

كَتَبَ اللّٰهُ لَأَغْلِبَنَّ أَنَا۠ وَرُسُلِىٓ ۚ إِنَّ اللّٰهَ قَوِىٌّ عَزِيزٌ ㉑

२२. अल्लाह (तआला) पर और क़यामत के दिन पर ईमान रखने वालों को आप अल्लाह और उस के रसूल के विरोधियों (मुख़ालिफ़ों) से

لَّا تَجِدُ قَوْمًا يُؤْمِنُونَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ يُوَآدُّونَ مَنْ حَآدَّ اللّٰهَ وَرَسُولَهُۥ وَلَوْ كَانُوٓا۟ ءَابَآءَهُمْ أَوْ أَبْنَآءَهُمْ أَوْ

[1] اسْتَحْوَذَ का मतलब 'घेर लिया', 'जमा कर लिया' है, इसलिए उसका तर्जुमा 'प्रभुत्व (ग़ल्बा) हासिल कर लिया' किया जाता है, क्योंकि ग़ल्बा में यह सभी मायने आ जाते हैं।

[2] مُحَادَّة (मुहाद्दत) ऐसे कड़े विरोध (मुख़ालफ़त), दुश्मनी और झगड़े को कहते हैं कि दोनों पक्षों का मेल बहुत मुश्किल हो। मानो दोनों दो किनारों (सीमा) पर है जो एक-दूसरे के ख़िलाफ़ हैं। इसी से यह 'रोकने' के मायने में इस्तेमाल होता है और इसीलिए पहरेदार को भी 'हद्दाद' कहा जाता है।

إِخْوَانَهُمْ أَوْ عَشِيرَتَهُمْ ۚ أُولَٰئِكَ كَتَبَ فِي قُلُوبِهِمُ الْإِيمَانَ وَأَيَّدَهُم بِرُوحٍ مِّنْهُ ۖ وَيُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ۚ أُولَٰئِكَ حِزْبُ اللَّهِ ۚ أَلَا إِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْمُفْلِحُونَ (22)

प्रेम करते हुए कभी न पायेंगे,[1] चाहे वे उन के पिता या उन के पुत्र या उन के भाई या उन के सम्बन्धी (परिवार के क़रीब) ही क्यों न हों,[2] यही लोग हैं जिन के दिल में अल्लाह (तआला) ने ईमान लिख दिया है और जिनकी पुष्टि (ताईद) अपनी आत्मा (रूह) से की है और जिन को उन स्वर्गों में प्रवेश (दाख़िला) देगा जिन के नीचे (ठंडे) पानी की नहरें बह रही हैं, जहाँ ये हमेशा रहेंगे, अल्लाह उन से ख़ुश है और ये अल्लाह से ख़ुश हैं,[3] यह अल्लाह की सेना है, जान लो कि बेशक अल्लाह के गिरोह वाले ही कामयाब लोग हैं।

سُورَةُ الْحَشْرِ

सूरतुल हश्र-५९

सूर: हश्र* मदीने में नाज़िल हुई, इसमें चौबीस आयतें और तीन रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

---

[1] इस आयत में अल्लाह तआला ने साफ़ किया है कि जो अल्लाह पर अक़ीदा (आस्था) और आख़िरत पर ईमान मे पूरे होते हैं, वह अल्लाह और रसूल ﷺ के दुश्मनों से मुहब्बत और दिली लगाव नहीं रखते, मानो ईमान और अल्लाह और रसूल ﷺ के दुश्मनों से मुहब्बत और समर्थन (ताईद) एक दिल में जमा नहीं हो सकते। यह विषय पाक क़ुरआन के दूसरे भी कई जगहों पर बयान किया गया है, जैसे आले-इमरान-२८, सूर: तौबा-२४, वग़ैरह।

[2] इसलिए कि उनका ईमान उनको उन के प्रेम से रोकता है और ईमान का तक़ाज़ा पिता, पुत्र, भाई और वंश और परिवार के प्रेम और पक्ष से ज़्यादा ज़रूरी होता है, जैसाकि सहाबये केराम रज़ि अल्लाहु अन्हुम ने यह करके दिखाया।

[3] यानी जब पहला मुसलमान, सहाबये केराम ईमान के बिना पर अपने संबन्धियों और रिश्तादारों पर खिन्न हो गये, यहाँ तक कि उन्हें अपने हाथों क़त्ल करने में भी संकोच नहीं किया तो उस के बदले अल्लाह ने उन्हें अपनी ख़ुशी दे दी और उन पर इस तरह अपने अनुग्रह (नेमत) की वर्षा की कि वह अल्लाह से ख़ुश हो गये।

* यह सूरह यहूद के एक क़बीले बनू नज़ीर के बारे में नाज़िल हुई है। इसलिए इसको सूरतुन्नज़ीर भी कहते हैं। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूरतिल हश्र)

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿1﴾

१. आकाशों और धरती की हर चीज अल्लाह तआला की पवित्रता (तस्बीह) बयान करती है, और वह गालिब हिक्मत वाला है।

هُوَ الَّذِىْٓ اَخْرَجَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ دِيَارِهِمْ لِاَوَّلِ الْحَشْرِ ؕ مَا ظَنَنْتُمْ اَنْ يَّخْرُجُوْا وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مَّانِعَتُهُمْ حُصُوْنُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَاَتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوْا وَقَذَفَ فِىْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ يُخْرِبُوْنَ بُيُوْتَهُمْ بِاَيْدِيْهِمْ وَاَيْدِى الْمُؤْمِنِيْنَ فَاعْتَبِرُوْا يٰٓاُولِى الْاَبْصَارِ ﴿2﴾

२. वही है जिस ने अहले किताब में से काफ़िरों को उन के घरों से पहला हश्र (जमाव) के समय निकाला,[1] तुम्हारा अंदाजा (भी) न था कि वे निकलेंगे और वह ख़ुद (भी) समझ रहे थे कि उन के (मजबूत) क़िले उन्हें अल्लाह (के अजाब) से बचा लेंगें, तो उन पर अल्लाह (का अजाब) ऐसे स्थान से आ पड़ा कि उन्हें अंदाजा भी न था और उन के दिलों में अल्लाह (तआला) ने डर डाल दिया, वे अपने घरों को अपने ही हाथों उजाड़ रहे थे और मुसलमानों के हाथों (बरबाद करवा रहे थे) तो हे आँखों वालो! नसीहत हासिल करो।

وَلَوْلَآ اَنْ كَتَبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمُ الْجَلَآءَ لَعَذَّبَهُمْ فِى الدُّنْيَا ؕ وَلَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ عَذَابُ النَّارِ ﴿3﴾

३. और अगर अल्लाह (तआला) ने उन पर देश निकाला न लिख दिया होता तो यक़ीनी तौर से उन्हें दुनिया में ही अजाब देता,[2] और आख़िरत में (तो) उन के लिए आग का अजाब है ही।

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَمَنْ يُّشَآقِّ اللّٰهَ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿4﴾

४. यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह (तआला) और उस के रसूल का विरोध किया, और जो भी अल्लाह का विरोध करेगा तो अल्लाह (तआला) भी कठोर अजाब देने वाला है।

---

[1] मदीने के आसपास यहूदियों के तीन क़बीले आबाद थे, बनू नजीर, बनू क़ुरैजा और बनू कैनुकाअ। मदीना आने के बाद नबी ﷺ ने उन से सुलह भी किया था, लेकिन यह लोग अन्दर से षड़यन्त्र (साजिश) करते रहे और मक्का के काफ़िरों से भी मुसलमानों के ख़िलाफ़ सम्पर्क (रावेता) रखा।

[2] यानी अल्लाह के लेख में इसी तरह उनका देश निकाला पहले से लिखा न होता तो उनको इस दुनिया ही में घोर यातना (अजाब) दे दी जाती, जैसाकि बाद में उन के भाई यहूद के एक-दूसरे क़बीले (क़ुरैजा) को ऐसी ही यातना में डाला गया कि उन के जवानों को क़त्ल कर दिया गया और दूसरों को क़ैदी बना लिया गया और उनका माल मुसलमानों के लिये ग़नीमत बना दिया गया।

مَا قَطَعْتُم مِّن لِّينَةٍ أَوْ تَرَكْتُمُوهَا قَائِمَةً عَلَىٰٓ أُصُولِهَا فَبِإِذْنِ اللَّهِ وَلِيُخْزِيَ الْفَاسِقِينَ ﴿5﴾

५. तुम ने खजूरों के जो पेड़ काट डाले और जिन्हें तुम ने उन की जड़ों पर बाक़ी रहने दिया, यह सब अल्लाह (तआला) के हुक्म से था और इसलिए भी कि कुकर्मियों (फ़ासिकों) को अल्लाह (तआला) अपमानित (ज़लील) करे।[1]

وَمَآ أَفَآءَ اللَّهُ عَلَىٰ رَسُولِهِۦ مِنْهُمْ فَمَآ أَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَلَا رِكَابٍ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهُۥ عَلَىٰ مَن يَشَآءُ ۚ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ ﴿6﴾

६. और उनका जो माल अल्लाह (तआला) ने अपने रसूल के हाथ लगाया है जिस पर तुम ने न घोड़े दौड़ाये हैं और न ऊँट, बल्कि अल्लाह (तआला) अपने रसूल को जिस पर चाहे प्रभावशाली (ग़ालिब) कर देता है[2] और अल्लाह तआला हर चीज़ पर क़ादिर है।

مَّآ أَفَآءَ اللَّهُ عَلَىٰ رَسُولِهِۦ مِنْ أَهْلِ الْقُرَىٰ فَلِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ وَلِذِى الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَٰمَىٰ وَالْمَسَٰكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ كَىْ لَا يَكُونَ دُولَةًۢ بَيْنَ الْأَغْنِيَآءِ مِنكُمْ ۚ وَمَآ ءَاتَىٰكُمُ الرَّسُولُ فَخُذُوهُ وَمَا نَهَىٰكُمْ عَنْهُ فَانتَهُوا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۖ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿7﴾

७. बस्तियों वालों का जो (धन) अल्लाह (तआला) ने तुम्हारे लड़ाई किये बिना ही अपने रसूल के हाथ लगाया, वह अल्लाह का है और रसूल का, क़रीबी रिश्तेदारों का, यतीमों का, ग़रीबों का और यात्रियों का है, ताकि तुम्हारे धनवानों के हाथों में ही यह धन चक्कर लगाता न रह जाये,[3] और तुम्हें जो कुछ रसूल दें तो ले

---

[1] لِينَة (लीनः) खजूर की एक क़िस्म है, जैसे अज्वा, बर्नी आदि (वग़ैरह) खजूरों की क़िस्में हैं।

[2] बनू नज़ीर का यह इलाक़ा जो मुसलमानों के अधिकार में आया, मदीने से तीन-चार मील की दूरी पर था, यानी मुसलमानों को इस के लिए लम्बी यात्रा की ज़रूरत नहीं हुई, मुसलमानों को ऊँट, घोड़े नहीं दौड़ाने पड़े, ऐसे ही लड़ना भी नहीं पड़ा और सुलह के ज़रिये यह इलाक़ा फ़त्ह हो गया, इसलिए यहाँ से मिले माल को 'फै' माना गया जिसका हुक्म ग़नीमत (परिहार) से अलग है। मानो वह माल 'फै' है, जो दुश्मन बिना लड़े छोड़ कर भाग जाये या समझौता से मिले और जो धन ग़नीमत रूप से लड़ाई और प्रभुत्व (ग़ल्बा) हासिल करने से मिले, वह 'ग़नीमत' है। 'ग़नीमत' का क़ानून यह है कि उस के पाँच हिस्से किये जायें, चार हिस्से मुजाहिदों में बाँटा जायेगा और पाँचवाँ हिस्सा अल्लाह के रसूल के लिए यानी मुसलमानों के बैतुलमाल (कोष गृह) के लिए हैं, लेकिन फ़ै का माल मुजाहिदों में बाँटा नहीं जायेगा, सभी माल अल्लाह के रसूल का है, यानी मुसलमानों के बैतुलमाल में रखा जायेगा।

[3] دُولَة (दूलह) उस चीज़ को कहते हैं जो कुछ लोगों के बीच फिरती रहे, उन से बाहर न निकले। यह माले फ़ै के इस्तेमाल की वजह बताया है, उसे मुजाहिदीन में बाँटने की जगह बैतुल माल का हिस्सा इसलिए क़रार दिया है कि यह धन धनवानों के बीच ही न फिरता रहे बल्कि समाज के दूसरे लोग भी उस से फ़ायेदा हासिल करें।

लो और जिस से रोकें रुक जाओ और अल्लाह (तआला) से डरते रहा करो, वेशक अल्लाह (तआला) कठोर अज़ाब वाला है।

لِلْفُقَرَآءِ الْمُهٰجِرِيْنَ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَاَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا وَّيَنْصُرُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ⑧

८. (फ़ै का धन) उन ग़रीब मुहाजिरों के लिए है जो अपने घरों से और अपने धनों से निकाल दिये गये हैं, वे अल्लाह की रहमत और ख़ुशी के इच्छुक हैं और अल्लाह (तआला) की और उस के रसूल की मदद करते हैं, यही सच्चे लोग हैं।[1]

وَالَّذِيْنَ تَبَوَّؤُ الدَّارَ وَالْاِيْمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّوْنَ مَنْ هَاجَرَ اِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُوْنَ فِيْ صُدُوْرِهِمْ حَاجَةً مِّمَّآ اُوْتُوْا وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ؕ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ⑨

९. और (उन के लिए) जिन्होंने इस घर में (यानी मदीने में) और ईमान में उन से पहले जगह बना लिया है[2] और अपनी तरफ़ हिजरत कर के आने वालों से मुहब्बत करते हैं और मुहाजिरों को जो कुछ दे दिया जाये, उस से वे अपने सीनों में कोई संकोच नहीं करते, बल्कि ख़ुद अपने ऊपर उनको प्राथमिकता (तरजीह) देते हैं चाहे ख़ुद उनको कितनी ही ज़्यादा ज़रूरत हो[3] (बात यह है) कि जो भी अपनी मनोकांक्षा (नफ़्स की कंजूसी) से बचाया गया वही कामयाब (और मुराद पाया हुआ) है।[4]

---

[1] इस में फ़ै के माल का एक सही ख़र्च बताया गया है और साथ ही मुहाजिरीन की श्रेष्ठता (फ़ज़ीलत) का इज़हार है, जिस के बाद उन के ईमान में शक करना मानो क़ुरआन का इंकार करना है।

[2] इस से मुराद मदीना के अंसार हैं जो मुहाजिरीन के मदीने आने से पहले मदीने में आवाद थे और मुहाजिरीन के हिजरत करके आने से पहले ईमान भी उन के दिलों में रच-बस गया था। यह मुराद नहीं है कि मुहाजिरीन के ईमान लाने से पहले यह अंसार ईमान ला चुके थे, क्योंकि उनकी ज़्यादा तादाद मुहाजिरीन के ईमान लाने के बाद ईमान लाई है।

[3] यानी अपने मुक़ाबले में मुहाजिरीन की ज़रूरत को प्राथमिकता (तरजीह) देते हैं, ख़ुद भूखे रहते हैं, लेकिन मुहाजिरीन को खिला देते हैं।

[4] हदीस में है कि मनोकांक्षा (आरज़ूओं) से बचो, क्योंकि इस मनोकांक्षा ने ही पहले लोगों को बरबाद किया, उसी ने उन्हें ख़ून-ख़राबा पर तैयार किया और उन्होंने निषेधित (हराम) को वैध (उचित) बना लिया। (सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर्रे, बाबु तहरीमिज़् ज़ुल्मे)

وَالَّذِيْنَ جَآءُوْ مِنْۢ بَعْدِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِاِخْوَانِنَا الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِيْ قُلُوْبِنَا غِلًّا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَآ اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ (10)

१०. और (उन के लिए) जो उन के बाद आयें, जो कहेंगे कि हे हमारे रब ! हमें माफ़ कर दे और हमारे उन भाईयों को भी जो हम से पहले ईमान ला चुके हैं और ईमानवालों की तरफ़ से हमारे दिल में कपट (और दुश्मनी) न डाल, हे हमारे रब ! बेशक तू प्रेम और दया (रहम) करने वाला है।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نَافَقُوْا يَقُوْلُوْنَ لِاِخْوَانِهِمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَئِنْ اُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ مَعَكُمْ وَلَا نُطِيْعُ فِيْكُمْ اَحَدًا اَبَدًا ۙ وَّاِنْ قُوْتِلْتُمْ لَنَنْصُرَنَّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ (11)

११. क्या तूने मुनाफ़िक़ों को नहीं देखा जो अपने अहले किताब काफ़िर भाईयों से कहते हैं कि अगर तुम देश से निकाल दिये गये तो हम भी ज़रूर तुम्हारे साथ देश छोड़ देंगे और तुम्हारे बारे में हम कभी भी किसी की बात क़बूल न करेंगे, और अगर तुम से युद्ध (जंग) किया जायेगा तो ज़रूर हम तुम्हारी मदद करेंगे, लेकिन अल्लाह (तआला) गवाही देता है कि ये बिल्कुल झूठे हैं।

لَئِنْ اُخْرِجُوْا لَا يَخْرُجُوْنَ مَعَهُمْ ۚ وَلَئِنْ قُوْتِلُوْا لَا يَنْصُرُوْنَهُمْ ۚ وَلَئِنْ نَّصَرُوْهُمْ لَيُوَلُّنَّ الْاَدْبَارَ ۫ ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ (12)

१२. अगर वे देश से निकाल दिये गये तो ये उन के साथ न जायेंगे और अगर उन से युद्ध छिड़ गया तो ये उनकी मदद (भी) नहीं करेंगे, और अगर यह (मान भी लिया जाये कि) मदद पर आ भी गये तो पीठ दिखाकर (भाग खड़े) होंगे, फिर मदद न किये जायेंगे।[1]

لَاَنْتُمْ اَشَدُّ رَهْبَةً فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنَ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ (13)

१३. (मुसलमानो! यक़ीन करो) कि तुम्हारा डर उन के सीनों में अल्लाह के डर के मुक़ाबले में बहुत ज़्यादा है, यह इसलिए कि ये समझते नहीं।[2]

---

[1] मतलब यहूदी हैं, यानी जब उन के सहयोगी मुनाफ़िक़ ही हार कर भाग खड़े होंगे तो यहूद कैसे विजयी और कामयाब होंगे? कुछ ने इस से मुराद मुनाफ़िक़ लिये हैं कि वह मदद नहीं किये जायेंगे, बल्कि अल्लाह उन्हें अपमानित (ज़लील) करेगा और उनका निफ़ाक़ (द्वयवाद) उन के लिए फ़ायदेमंद नहीं होगा।

[2] यानी तुम्हारा यह डर उन के दिलों में उनकी नासमझी की वजह से है, नहीं तो अगर वह समझ रखेते तो समझ जाते कि मुसलमानों का प्रभुत्व (ग़ल्बा) और विजय अल्लाह की तरफ़ से है, इसलिए डरना अल्लाह ही से चाहिए न कि मुसलमानों से।

لَا يُقَاتِلُوْنَكُمْ جَمِيْعًا اِلَّا فِيْ قُرًى مُّحَصَّنَةٍ اَوْ مِنْ وَّرَآءِ جُدُرٍ ؕ بَاْسُهُمْ بَيْنَهُمْ شَدِيْدٌ ؕ تَحْسَبُهُمْ جَمِيْعًا وَّقُلُوْبُهُمْ شَتّٰى ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ ﴿14﴾

१४. ये सब मिलकर भी तुम से लड़ नहीं सकते, लेकिन यह अलग बात है कि किला से घिरे जगहों में हों या दीवारों की ओट में हों, उनकी लड़ाई तो आपस में ही बहुत कठोर है, यद्यपि (अगरचे) आप उनको एकमत समझ रहे हैं, लेकिन हक़ीक़त में उन के दिल आपस में अलग हैं, यह इसलिए कि ये बेअक़्ल लोग हैं।

كَمَثَلِ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيْبًا ذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿15﴾

१५. उन लोगों की तरह जो उन से कुछ ही पहले गुज़रे हैं, जिन्होंने अपने पापों का मज़ा चख लिया और जिन के लिए दुखदायी अज़ाब (तैयार) है।

كَمَثَلِ الشَّيْطٰنِ اِذْ قَالَ لِلْاِنْسَانِ اكْفُرْ ۚ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّنْكَ اِنِّيْٓ اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿16﴾

१६. शैतान की तरह कि उसने इंसान से कहा, कुफ्र कर, जब वह कुफ्र कर चुका तो कहने लगा कि मैं तो तुझ से अलग हूँ,[1] मैं तो सारी दुनिया के रब से डरता हूँ।

فَكَانَ عَاقِبَتَهُمَآ اَنَّهُمَا فِي النَّارِ خَالِدَيْنِ فِيْهَا ؕ وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِيْنَ ﴿17﴾

१७. तो दोनों का नतीजा यह हुआ कि (नरक की) आग में सदा के लिए गये और ज़ालिमों की यही सज़ा है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌ ۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿18﴾

१८. हे ईमानवालो! अल्लाह से डरते रहो,[2] और हर इंसान देख-भाल ले कि कल (क़यामत यानी प्रलय) के लिए उस ने कर्मों (अमल) का क्या (भण्डार) भेजा है,[3] और (हर वक़्त) अल्लाह से डरते रहो, अल्लाह तुम्हारे सारे कर्मों से परिचित (वाक़िफ़) है।

---

[1] यह यहूद और मुनाफ़िक़ों की एक और मिसाल दी है कि मुनाफ़िक़ों ने यहूदियों को ऐसे ही बिना मदद के छोड़ दिया जैसे शैतान इंसान के साथ सुलूक करता है, पहले वह इंसान को गुमराह करता है और जब इंसान शैतान का अनुसरण (पैरवी) करके कुफ्र कर लेता है तो शैतान उस से अपनी निर्दोषता (बराअत) दिखाने लगता है।

[2] ईमानवालों को संबोधित (मुख़ातिब) करके उन्हें उपदेश (नसीहत) दिया जा रहा है, अल्लाह से डरने का मतलब है उसने जिन चीज़ों का हुक्म दिया है उन्हें पूरा करो, जिन से रोका है उन से रुक जाओ। आयत में यह बल देने के लिए दो बार फ़रमाया है, क्योंकि यह 'तक़वा' (अल्लाह का डर) ही इंसान को नेकी करने और बुराई से रुकने पर तैयार करता है।

[3] कल से मुराद क़यामत (प्रलय) है, उसे कल से व्यंजित (ताबीर) करके इस तरफ़ भी इशारा कर दिया कि उसका होना बहुत दूर नहीं क़रीब ही है।

१९. और तुम उन लोगों की तरह न हो जाना जिन लोगों ने अल्लाह (के हुक्म) को भुला दिया तो अल्लाह ने उन्हें अपने आप से भुला दिया, ऐसे ही लोग नाफ़रमान होते हैं।

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ نَسُوا اللَّهَ فَأَنسَاهُمْ أَنفُسَهُمْ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ﴿19﴾

२०. नरक वाले और स्वर्ग वाले, (आपस में) बराबर नहीं,[1] जो स्वर्ग वाले हैं वही कामयाब हैं।

لَا يَسْتَوِي أَصْحَابُ النَّارِ وَأَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۚ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَائِزُونَ ﴿20﴾

२१. अगर हम इस क़ुरआन को किसी पहाड़ पर नाज़िल करते[2] तो तू देखता कि अल्लाह के डर से वह झुक कर कण-कण (रेज़ा-रेज़ा) हो जाता। हम इन मिसालों को लोगों के सामने बयान करते हैं ताकि वे चिन्तन-मनन (सोच-फ़िक्र) करें।

لَوْ أَنزَلْنَا هَٰذَا الْقُرْآنَ عَلَىٰ جَبَلٍ لَّرَأَيْتَهُ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللَّهِ ۚ وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ﴿21﴾

२२. वही अल्लाह है जिस के सिवाय कोई (सच्चा) पूज्य नहीं, छिपी और खुली का जानने वाला, वही माफ़ और दया (रहम) करने वाला।

هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۖ هُوَ الرَّحْمَٰنُ الرَّحِيمُ ﴿22﴾

---

[1] जिन्होंने अल्लाह को भुला कर यह बात भी भुलाये रखी, इस तरह वह ख़ुद अपनी ही जानों पर ज़ुल्म कर रहे हैं और एक दिन आयेगा कि इस के फलस्वरूप (नतीजे में) उन के यह शरीर, जिन के लिए वह दुनिया में बड़े-बड़े पापड़ बेलते थे, नरक की आग का ईंधन बनेंगे, और उन के मुक़ाबले में दूसरे वह लोग थे जिन्होंने अल्लाह को याद रखा, उस के आदेशानुसार (हुक्म के मुताबिक़) जिन्दगी गुज़ारा। एक समय आयेगा कि अल्लाह तआला उन्हें उसका अच्छा बदला (अज्र) देगा और अपने स्वर्ग में उन्हें दाख़िल करेगा, जहाँ उन के आराम के लिए हर तरह का ऐश व आराम होगा। यह दोनों गिरोह यानी नरक वाले और स्वर्ग वाले बराबर नहीं होंगे, भला यह बराबर हो भी कैसे सकते हैं? एक ने अपने अंत (नतीजा) को याद रखा और उस के लिए तैयारी करता रहा, दूसरा अपने अंत से निश्चिन्त (बेख़बर) रहा इसलिए उस के लिए तैयारी में भी विमुखता (ग़फ़लत) अपनायी।

[2] यानी हम ने पाक क़ुरआन में जो असर, सफ़ाई, शक्ति, दलील, शिक्षा और उपदेश (नसीहत) के ऐसे पक्ष बयान किये हैं कि उन्हें सुनकर पहाड़ भी इतनी कड़ाई, फैलाव और ऊँचाई के बावजूद अल्लाह के डर से कण-कण (रेज़ा-रेज़ा) हो जाते। यह इंसान को बतलाया और समझाया जा रहा है कि तुझे समझ-बूझ की योग्यता (क़ाबलियत) दी गई है, लेकिन अगर क़ुरआन सुन कर तेरे दिल पर कोई असर नहीं पड़ता तो तेरा नतीजा अच्छा नहीं होगा।

هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الْمَلِكُ الْقُدُّوسُ السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ۚ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ (23)

२३. वही अल्लाह है जिसके सिवाय कोई (सच्चा) पूज्य नहीं, मालिक, बहुत पाक, सभी बुराईयों से आज़ाद, शान्ति अता करने वाला, रक्षक (निगराँ), ग़ालिब, ताक़तवर, अज़ीम, पाक है अल्लाह उन चीज़ों से जिन्हें ये उसका साझीदार बनाते हैं।

هُوَ اللَّهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ ۖ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ ۚ يُسَبِّحُ لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ (24)

२४. वही अल्लाह है पैदा करने वाला, बनाने वाला, रूप देने वाला, उसी के लिए (बहुत) अच्छे नाम हैं, हर चीज़ चाहे आकाशों में हो या धरती में हो उसकी पाकी बयान करती हैं, और वही जबरदस्त और हिक्मत वाला हैं।

سُورَةُ الْمُمْتَحَنَةِ

सूरतुल मुम्तहिन:-६०

सूर: मुम्तहिन: मदीने में नाज़िल हुई और इस में तेरह आयतें और दो रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا عَدُوِّي وَعَدُوَّكُمْ أَوْلِيَاءَ تُلْقُونَ إِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ وَقَدْ كَفَرُوا بِمَا جَاءَكُمْ مِنَ الْحَقِّ يُخْرِجُونَ الرَّسُولَ وَإِيَّاكُمْ ۙ أَنْ تُؤْمِنُوا بِاللَّهِ رَبِّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَادًا فِي سَبِيلِي وَابْتِغَاءَ مَرْضَاتِي ۚ تُسِرُّونَ إِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ وَأَنَا أَعْلَمُ بِمَا أَخْفَيْتُمْ وَمَا أَعْلَنْتُمْ ۚ وَمَنْ يَفْعَلْهُ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ (1)

१. हे वे लोगो जो ईमान लाये हो ! मेरे और अपने दुश्मनों को अपना दोस्त न बनाओ,[1] तुम तो दोस्ती से उनकी ओर संदेश भेजते हो,और वे उस सच का जो तुम्हारे पास आ चुका है इंकार करते हैं, रसूल को और ख़ुद तुम को भी सिर्फ़ इस वजह से निकालते हैं कि तुम अपने रब पर ईमान रखते हो, अगर तुम मेरे रास्ते में जिहाद के लिए और मेरी ख़ुशी की खोज में निकले हो (तो उन से दोस्ती न करो) तुम उन के पास प्रेम का संदेश छिपा-छिपा कर भेजते हो और मुझे अच्छी तरह मालूम है जो तुम ने छिपाया और

---

[1] मक्का के काफ़िरों और नबी ﷺ के बीच हुदैबिया में जो समझौता हुआ था मक्का वालों ने उसकी ख़िलाफ़वर्ज़ी की। इसलिए रसूलुल्लाह ﷺ ने भी छिपे तौर से मुसलमानों को लड़ाई की तैयारी का हुक्म दे दिया, जिसकी ख़बर हातिब पुत्र अबू बल्तआ जो एक बद्री मुहाजिर सहाबी थे जिनको कुरैश के साथ कोई नाता नहीं था, लेकिन उनकी पत्नी और बच्चे मक्का ही में थे, उन्होंने यह संदेश एक औरत के माध्यम (ज़रिये) से लिखित रूप में मक्कावासियों की तरफ़ भेज दिया, जिसकी ख़बर नबी ﷺ को वह्यी द्वारा दे दी गई। उसी समय यह आयतें उतारीं ताकि भविष्य (मुस्तक़बिल) में कोई मुसलमान किसी काफ़िर के साथ ऐसी दोस्ती क़ायम न करे। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूरतिल मुम्तहिन:, मुस्लिम, किताबु फ़ज़ायेलिस सहाबा)

वह भी जो तुम ने जाहिर किया, तुम में से जो भी इस काम को करेगा वह बेशक सीधे रास्ते से भटक जायेगा।

إِنْ يَثْقَفُوكُمْ يَكُونُوا لَكُمْ أَعْدَاءً وَيَبْسُطُوا إِلَيْكُمْ أَيْدِيَهُمْ وَأَلْسِنَتَهُمْ بِالسُّوءِ وَوَدُّوا لَوْ تَكْفُرُونَ ﴿2﴾

२. अगर वे तुम पर कहीं क़ाबू पा लें तो वे तुम्हारे (खुले) दुश्मन हो जायें और बुराई के साथ तुम पर हाथ उठाने लगें और बुरे शब्द (लफ़्ज़) कहने लगें और (दिल से) चाहने लगें कि तुम भी कुफ्र करने लगो।[1]

لَنْ تَنْفَعَكُمْ أَرْحَامُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ ۚ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَفْصِلُ بَيْنَكُمْ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿3﴾

३. तुम्हारी नातेदारियाँ (और रिश्ते) और औलाद तुम्हें क़यामत (प्रलय) के दिन काम न आयेंगे[2] अल्लाह (तआला) तुम्हारे बीच फ़ैसला कर देगा और तुम जो कुछ कर रहे हो उसे अल्लाह अच्छी तरह देख रहा है।

قَدْ كَانَتْ لَكُمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِي إِبْرَاهِيمَ وَالَّذِينَ مَعَهُ إِذْ قَالُوا لِقَوْمِهِمْ إِنَّا بُرَآءُ مِنْكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ كَفَرْنَا بِكُمْ وَبَدَا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَاءُ أَبَدًا حَتَّىٰ تُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَحْدَهُ إِلَّا قَوْلَ إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ لَأَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ وَمَا أَمْلِكُ لَكَ مِنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ ۖ رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَإِلَيْكَ أَنَبْنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ ﴿4﴾

४. (मुसलमानो!) तुम्हारे लिए (हज़रत) इब्राहीम में और उन के साथियों में बहुत अच्छा नमूना है, जबकि उन सब ने अपनी क़ौम से साफ़ शब्दों में कह दिया कि हम तुम से और जिन-जिन की तुम अल्लाह के सिवाय पूजा करते हो, उन सब से पूरी तरह से विमुख (बरी) हैं। हम तुम्हारे (अक़ीदे का) इंकार करते हैं, और जब तक तुम अल्लाह के एक होने पर ईमान न लाओ हम में तुम में हमेशा के लिए कपट और बैर पैदा हो गई[3] लेकिन इब्राहीम की इतनी बात तो अपने पिता से हुई थी कि मैं तुम्हारे लिए क्षमा-

[1] यानी तुम्हारे विरोध (मुख़ालफ़त) में उन के दिलों में तो इस तरह बैर है और तुम हो कि उन के साथ प्रेम की पींगें बढ़ा रहे हो।

[2] यानी जिस संतान (औलाद) के लिए तुम काफ़िरों के साथ प्रेम दिखाते हो, यह तुम्हारे कुछ काम नहीं आयेगी, फिर उस की वजह से तुम काफ़िरों से दोस्ती करके क्यों अल्लाह को नाखुश करते हो? क़यामत के दिन जो चीज़ काम आयेगी वह तो अल्लाह और उस के रसूल ﷺ का आज्ञापालन (इताअत) है, इसका प्रबन्ध (इन्तेज़ाम) करो।

[3] यानी यह बिलगाव और विमुखता (बराअत) उस समय तक रहेगी जब तक तुम कुफ्र और शिर्क को छोड़ कर तौहीद (अद्वैत) को न अपना लो। हाँ, जब तुम एक अल्लाह को मानने लगोगे तो फिर यह बैर प्रेम से बदल जायेगा और दुश्मनी प्रेम भाव में।

याचना (इस्तिग़फ़ार) ज़रूर करूँगा और तुम्हारे लिए मुझे अल्लाह के सामने कोई हक़ भी नहीं। हे हमारे रब! तुझ पर ही हमने भरोसा किया है,[1] और तेरी ही तरफ़ हम आकर्षित (मुतवज्जह) होते हैं और तेरी ही तरफ़ फिर आना है।

رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلَّذِينَ كَفَرُوا وَاغْفِرْ لَنَا رَبَّنَا ۖ إِنَّكَ أَنتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿5﴾

५. हे हमारे रब! तू हमें काफ़िरों के इम्तेहान में न डाल, और हे हमारे रब! हमारी ग़लतियों को माफ़ कर, बेशक तू ही प्रभावशाली (ग़ालिब) और हिक्मत वाला है।

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيهِمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَن كَانَ يَرْجُو اللَّهَ وَالْيَوْمَ الْآخِرَ ۚ وَمَن يَتَوَلَّ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ﴿6﴾

६. बेशक तुम्हारे लिए उन में अच्छे आदर्श (उसवा) (और अच्छी पैरवी है ख़ास कर) हर उस इंसान के लिए जो अल्लाह और क़यामत के दिन की मुलाक़ात पर यक़ीन रखता हो, और अगर कोई विमुख (मुँह फेरने वाला) हो जाये तो अल्लाह (तआला) पूरी तरह से बेनियाज़ है और बड़ाई और तारीफ़ के योग्य (लायक़) है।

عَسَى اللَّهُ أَن يَجْعَلَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِينَ عَادَيْتُم مِّنْهُم مَّوَدَّةً ۚ وَاللَّهُ قَدِيرٌ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿7﴾

७. क्या ताज्जुब कि क़रीब ही अल्लाह (तआला) तुम में और तुम्हारे दुश्मनों में प्रेम पैदा कर दे,[2] अल्लाह (तआला) को सभी क़ुदरत है और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला और रहम करने वाला (दयालु) है।

---

[1] توكل (भरोसा) का मतलब है, ज़ाहिरी संसाधनों (असबाब) को अपनाने के बाद मामला अल्लाह के हवाले कर दिया जाये, यह मतलब नहीं कि असबाब को अपनाये बिना ही अल्लाह पर भरोसा दिखाया जाये, इससे हम को रोका गया है। एक व्यक्ति नबी ﷺ की सेवा में हाज़िर हुआ और ऊँट को बाहर खड़ा करके भीतर आ गया, आप ﷺ ने पूछा तो कहा कि मैं ऊँट अल्लाह के हवाले कर के आया हूँ। आप ने फ़रमाया कि यह भरोसा नहीं। اعقل و توكل "पहले उसे बाँध फिर अल्लाह पर भरोसा कर।" (तिर्मिज़ी)

[2] यानी उन्हें मुसलमान बनाकर तुम्हारा भाई और साथी बना दे, जिस से तुम्हारे बीच की दुश्मनी दोस्ती और प्रेम में बदल जायेगी, और ऐसा ही हुआ, मक्का विजय (फ़तह) के बाद लोग गिरोहों में मुसलमान होना शुरू हो गये और उन के मुसलमान होते ही नफ़रतें प्रेम में बदल गई, जो मुसलमानों के ख़ून के प्यासे थे वह हाथ पाँव बन गये।

لَا يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ لَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ وَلَمْ يُخْرِجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْهُمْ وَتُقْسِطُوْٓا اِلَيْهِمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ⑧

८. जिन लोगों ने तुम से धर्म के बारे में युद्ध नहीं किया और तुम्हें देश से नहीं निकाला, उन के साथ अच्छा सुलूक और एहसान करने और इंसाफ़ वाला बर्ताव करने से अल्लाह (तआला) तुम्हें नहीं रोकता, (बल्कि) बेशक अल्लाह (तआला) तो इंसाफ़ करने वालों से प्रेम करता है।[1]

اِنَّمَا يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ قٰتَلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ وَاَخْرَجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ وَظٰهَرُوْا عَلٰٓي اِخْرَاجِكُمْ اَنْ تَوَلَّوْهُمْ ۚ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ⑨

९. अल्लाह (तआला) तुम्हें केवल उन लोगों से प्रेम करने से रोकता है, जिन्होंने तुम से धर्म के बारे में लड़ाई किया और तुम्हें देश से निकाला और देश से निकालने वालों की मदद की, जो लोग ऐसे काफ़िरों से प्रेम करें वही (यक़ीनी तौर से) ज़ालिम हैं।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا جَاۗءَكُمُ الْمُؤْمِنٰتُ مُهٰجِرٰتٍ فَامْتَحِنُوْهُنَّ ۭ اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِهِنَّ ۚ فَاِنْ عَلِمْتُمُوْهُنَّ مُؤْمِنٰتٍ فَلَا تَرْجِعُوْهُنَّ اِلَى الْكُفَّارِ ۭ لَا هُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّوْنَ لَهُنَّ ۭ وَاٰتُوْهُمْ مَّآ اَنْفَقُوْا ۭ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ اِذَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ ۭ وَلَا تُمْسِكُوْا بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ وَسْـَٔلُوْا مَآ اَنْفَقْتُمْ وَلْيَسْـَٔلُوْا مَآ اَنْفَقُوْا ۭ ذٰلِكُمْ حُكْمُ اللّٰهِ ۭ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ⑩

१०. हे ईमानवालो! जब तुम्हारे पास मुसलमान औरतें हिजरत करके आयें तो तुम उनकी परीक्षा (इम्तेहान) ले लिया करो, हक़ीक़त में उन के ईमान को अच्छी तरह जानने वाला तो अल्लाह ही है, लेकिन अगर वे तुम्हें ईमान वाली मालूम हों तो अब तुम उन्हें काफ़िरों की तरफ़ वापस न करो, यह उन के लिए हलाल (वैध) नहीं और न वे इन के लिए हलाल हैं, और जो ख़र्च उन काफ़िरों का हुआ हो वह उन्हें अदा कर दो,उन औरतों को उनकी महर देकर उन से विवाह कर लेने में तुम पर कोई पाप नहीं,[2] और

[1] इस में इंसाफ़ करने की तरग़ीब (प्रोत्साहन) है यहां तक कि काफ़िरों के साथ भी।

[2] यह मुसलमानों से कहा जा रहा है कि यह औरतें जो ईमान के लिए अपने पतियों को छोड़कर तुम्हारे पास आ गई हैं, तुम उन से विवाह कर सकते हो, शर्त यह है कि उनकी महर उन्हें दे दो, किन्तु यह विवाह सुन्नत के अनुसार ही होगा, यानी एक तो इद्दत पूरी हो जाने (रिहम की सफ़ाई) के बाद होगा, दूसरे उस में वली (संरक्षक) की इजाज़त और दो न्यायी गवाहों की मौजूदगी भी फ़र्ज़ है। हां, अगर औरत से पति ने सहवास (जिमाअ) नहीं किया है तो फिर बिना मुद्दत तुरन्त विवाह (शादी) भी जायेज़ है।

काफ़िर औरतों के विवाह बन्धन को अपने क़ब्ज़े में न रखो[1] और जो कुछ तुम ने ख़र्च किया हो माँग लो, और जो कुछ उन काफ़िरों ने ख़र्च किया हो, वह भी माँग लें, यह अल्लाह का फ़ैसला है जो तुम्हारे बीच कर रहा है, और अल्लाह (तआला) जानने वाला (और) हिक्मत वाला है।

وَإِنْ فَاتَكُمْ شَيْءٌ مِّنْ أَزْوَاجِكُمْ إِلَى الْكُفَّارِ فَعَاقَبْتُمْ فَآتُوا الَّذِينَ ذَهَبَتْ أَزْوَاجُهُم مِّثْلَ مَا أَنفَقُوا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي أَنتُم بِهِ مُؤْمِنُونَ ⑪

११. और अगर तुम्हारी कोई पत्नी तुम्हारे हाथ से निकल जाये और काफ़िरों के पास चली जाये, फिर तुम्हें बदले का समय मिल जाये तो जिनकी पत्नियाँ चली गयी हैं उन्हें उन के ख़र्च के समान अदा कर दो, और उस अल्लाह से डरते रहो जिस पर तुम ईमान रखते हो।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا جَاءَكَ الْمُؤْمِنَاتُ يُبَايِعْنَكَ عَلَىٰ أَن لَّا يُشْرِكْنَ بِاللَّهِ شَيْئًا وَلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِينَ وَلَا يَقْتُلْنَ أَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَأْتِينَ بِبُهْتَانٍ يَفْتَرِينَهُ بَيْنَ أَيْدِيهِنَّ وَأَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِينَكَ فِي مَعْرُوفٍ ۙ فَبَايِعْهُنَّ وَاسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللَّهَ ۖ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ⑫

१२. हे रसूल! (संदेष्टा) जब मुसलमान औरतें आप से इन बातों पर बैअत करने आयें कि वह अल्लाह के साथ किसी को साझीदार नहीं बनायेंगी, चोरी न करेंगी, व्याभिचार (बदकारी) न करेंगी, अपनी औलाद को न मार डालेंगी और न कोई ऐसा आक्षेप (बुहतान) लगायेंगी जो ख़ुद अपने हाथों-पैरों के सामने गढ़ लें और किसी नेकी के काम में तेरी नाफ़रमानी न करेंगी, तो आप उन से बैअत कर लिया करें[2]

---

[1] عِصَم (एसम) عِصْمَة (इस्मत) का बहुवचन (जमा) है, यहाँ इस से मुराद विवाह बंधन है। मतलब यह है कि अगर पति मुसलमान हो जाये और पत्नी उसी तरह काफ़िर और मुश्रिक रहे तो पत्नी को अपने विवाह में रखना जायेज नहीं है, उसे तुरन्त तलाक़ देकर अपने से अलग कर दिया जाये, और इस हुक्म के बाद हज़रत उमर ﷺ ने अपनी दो मुश्रिक पत्नियों को और हज़रत तलहा पुत्र उबैदुल्लाह ने अपनी पत्नी को तलाक़ दे दिया। (इब्ने कसीर) हाँ, अगर पत्नी किताबिया (यहूदी और ईसाई) हो तो उसे तलाक़ देना ज़रूरी नहीं है, क्योंकि उन से विवाह उचित (जायज़) है। इसलिए अगर वह पहले ही से बीवी के रूप में तुम्हारे पास है तो इस्लाम क़ुबूल करने के बाद उसे अलग करने की ज़रूरत नहीं है।

[2] यह बैअत (प्रतिज्ञा) उसी समय लेते जब औरतें हिजरत करके आतीं, जैसाकि सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूरह मुम्तहिना में है। इस के अलावा मक्का विजय के दिन भी आप ने क़ुरैश की औरतों से बैअत ली। बैअत (प्रतिज्ञा) लेते समय आप ﷺ केवल ज़ुबानी वादा लेते। किसी औरत के हाथ को नहीं छूते।

और उनके लिए अल्लाह से माफ़ी माँगे, बेशक अल्लाह (तआला) माफ़ करने वाला दयालु है।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَا تَتَوَلَّوْا۟ قَوْمًا غَضِبَ ٱللَّهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَئِسُوا۟ مِنَ ٱلْءَاخِرَةِ كَمَا يَئِسَ ٱلْكُفَّارُ مِنْ أَصْحَٰبِ ٱلْقُبُورِ ﴿13﴾

१३. हे मुसलमानो ! तुम उस क़ौम से दोस्ती न रखो,[1] जिन पर अल्लाह का अज़ाब आ चुका है जो आख़िरत से इस तरह निराश हो चुके हैं जैसेकि मुर्दे क़ब्र वालों से काफ़िर मायूस हैं।

सूरतुस सफ़्फ़-६१

سُورَةُ الصَّفِّ

सूर: सफ़्फ़* मदीने में नाज़िल हुई, इस में चौदह आयतें और दो रूकुअ़ हैं।

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِى ٱلْأَرْضِ ۖ وَهُوَ ٱلْعَزِيزُ ٱلْحَكِيمُ ﴿1﴾

१. आकाशों और धरती की हर चीज़ अल्लाह (तआला) की पवित्रता (पाकीज़गी) बयान करती है और वही प्रभावशाली (ग़ालिब) और हिक्मत वाला है।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لِمَ تَقُولُونَ مَا لَا تَفْعَلُونَ ﴿2﴾

२. हे ईमानवालो! तुम वह बात क्यों कहते हो जो करते नहीं?

كَبُرَ مَقْتًا عِندَ ٱللَّهِ أَن تَقُولُوا۟ مَا لَا تَفْعَلُونَ ﴿3﴾

३. तुम जो करते नहीं, उसका कहना अल्लाह (तआला) को नापसन्द है।

---

[1] इस से कुछ ने यहूद, कुछ ने अवसरवादी (मुनाफ़िक़) और कुछ ने काफ़िर मुराद लिया है। यह आख़िरी बात ही ज़्यादा सही है, क्योंकि इस में यहूद और द्वयवादी (मुनाफ़िक़) भी आ जाते हैं। इस के सिवा सभी काफ़िर ही अल्लाह के अज़ाब के मुस्तहिक़ हैं, इसलिए मतलब यह होगा कि किसी भी काफ़िर से दोस्ती का रिश्ता न रखो, जैसाकि यह विषय क़ुरआन के कई जगहों पर बयान किया गया है।

* इस सूर: के अवतरण (नुज़ूल) की वजह में आता है कि कुछ सहाबा (नबी के सहचर) आपस में बातें कर रहे थे कि अल्लाह को जो अमल सब से ज़्यादा प्यारा है वह रसूलुल्लाह ﷺ से पूछने चाहिए ताकि उस के मुताबिक़ अमल किया जाये, किन्तु आप के पास जाकर पूछने की हिम्मत कोई नहीं कर रहा था, इस पर अल्लाह ने यह सूरह उतारी। (मुसनद अहमद ५\४५२, तिर्मिज़ी तफ़सीर सुरतुस्सफ़्फ़)

إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الَّذِينَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِهِ صَفًّا كَأَنَّهُم بُنْيَانٌ مَّرْصُوصٌ ④

४. बेशक अल्लाह (तआला) उन लोगों को प्रिय रखता है जो उस के रास्ते में पंक्तिबद्ध (सफ़बस्ता) होकर जिहाद करते हैं, जैसेकि वे सीसा पिलाई हुई इमारत हैं।

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ يَا قَوْمِ لِمَ تُؤْذُونَنِي وَقَد تَّعْلَمُونَ أَنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ ۖ فَلَمَّا زَاغُوا أَزَاغَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ ۚ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ⑤

५. और (याद करो) जब मूसा ने अपने समुदाय (क़ौम) से कहा कि हे मेरी क़ौम के लोगो! तुम मुझे क्यों पीड़ित कर रहे हो जबकि तुम्हें अच्छी तरह मालूम है कि मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का रसूल हूँ,[1] तो जब वे लोग टेढ़े ही रहे तो अल्लाह ने उन के दिलों को और टेढ़ा कर दिया, और अल्लाह (तआला) नाफ़रमान क़ौम को मार्गदर्शन (हिदायत) नहीं देता।

وَإِذْ قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ يَا بَنِي إِسْرَائِيلَ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُم مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرَاةِ وَمُبَشِّرًا بِرَسُولٍ يَأْتِي مِن بَعْدِي اسْمُهُ أَحْمَدُ ۖ فَلَمَّا جَاءَهُم بِالْبَيِّنَاتِ قَالُوا هَٰذَا سِحْرٌ مُّبِينٌ ⑥

६. और जब मरियम के पुत्र ईसा ने कहा कि हे (मेरी क़ौम) इस्राईल की औलाद! मैं तुम सब की तरफ़ अल्लाह का रसूल हूँ, मुझ से पहले की किताब तौरात की पुष्टि (तसदीक़) करने वाला हूँ,[2] और अपने बाद आने वाले एक रसूल की ख़ुशख़बरी सुनाने वाला हूँ जिनका नाम अहमद है,[3] फिर जब वह उन के सामने साफ़ निशानियाँ लाये तो वे कहने लगे कि यह तो खुला जादू है।

---

[1] यह जानते हुए भी कि हज़रत मूसा عليه السلام अल्लाह के सच्चे रसूल हैं, इस्राईल की औलाद उन्हें अपने मुँह (बात) से कष्ट देती थी, यहाँ तक कि कुछ जिस्मानी ऐब उन से संबन्धित (मंसूब) करती थी जबकि वह रोग उन में नहीं था।

[2] ईश्दूत ईसा عليه السلام की कहानी का बयान इसलिए किया कि इस्राईल की औलाद ने जैसे ईश्दूत मूसा عليه السلام की नाफ़रमानी की, वैसे ही उन्होंने हज़रत ईसा का भी इंकार किया, इस में नबी ﷺ को तसल्ली दी जा रही है कि यह यहूद आप ﷺ ही के साथ ऐसा नहीं कर रहे हैं, बल्कि इनका तो पूरा इतिहास ही ईश्दूतों को झुठलाने से भरा है।

[3] यह हज़रत ईसा عليه السلام ने अपने बाद आने वाले आख़िरी रसूल हज़रत मोहम्मद ﷺ की ख़ुशख़बरी सुनाई। जैसेकि नबी ﷺ ने फ़रमाया :

"मैं अपने पिता इब्राहीम की दुआ और ईसा की ख़ुशख़बरी का चरितार्थ (मिस्दाक़) हूँ।" (ऐसरूत्तफ़ासीर)

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُوَ يُدْعٰٓى اِلَى الْاِسْلَامِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿7﴾

७. और उस इंसान से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह (तआला) पर झूठ गढ़े? जबकि वह इस्लाम की तरफ़ बुलाया जाता है, और अल्लाह ऐसे ज़ालिमों को हिदायत नहीं देता।

يُرِيْدُوْنَ لِيُطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ مُتِمُّ نُوْرِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿8﴾

८. वे चाहते हैं कि अल्लाह के नूर को अपनी फूंक से बुझा दें,[1] और अल्लाह अपनी दिव्य ज्योति (नूर) को उच्च पदों तक ले जाने वाला है, चाहे काफ़िर बुरा मानें।

هُوَ الَّذِىْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ۙ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ﴿9﴾

९. वही है जिस ने अपने रसूल (संदेष्टा) को मार्गदर्शन (हिदायत) और सच्चा दीन (धर्म) दे कर भेजा ताकि उसे दूसरे सभी धर्मों पर प्रभावशाली (ग़ालिब) कर दे, चाहे मूर्तिपूजक नाखुश हों।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى تِجَارَةٍ تُنْجِيْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿10﴾

१०. हे ईमानवालो ! क्या मैं तुम्हें वह व्यापार बताऊँ[2] जो तुम्हें कष्टदायी (तक्लीफ़देह) अज़ाब से बचा ले?

تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُجَاهِدُوْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿11﴾

११. अल्लाह (तआला) पर और उस के रसूल पर ईमान लाओ और अल्लाह के रास्ते में अपने तन, मन और धन से जिहाद करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम में ज्ञान (इल्म) हो।

---

[1] प्रकाश (नूर) से मुराद पाक क़ुरआन, इस्लाम, मोहम्मद ﷺ, दलील और सुबूत हैं। मुँह से बुझा दें का मतलब वह व्यंग (तंज़) और कटाक्ष (तंक़ीद) हैं जो उन के मुँह से निकलते थे।

[2] इस कर्म (यानी ईमान और जिहाद) को व्यापार से व्यंजित (ताबीर) किया, इसलिए कि इस में भी इन्हें व्यापार की तरह फ़ायेदा होगा और वह फ़ायेदा क्या है? स्वर्ग में प्रवेश और नरक से आज़ादी, इस से बड़ा फ़ायेदा और क्या होगा? इस बात को दूसरी जगह पर इस तरह बयान किया है।

﴿إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَى مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُم بِأَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ﴾

"अल्लाह ने मोमिनों से उनकी जानों और मालों का सौदा जन्नत के बदले में कर लिया है।" (अत्तौबा-१११)

يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِىْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ۭ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ⑫

१२. (अल्लाह तआला) तुम्हारे पाप माफ़ कर देगा और तुम्हें उन स्वर्गों में पहुँचायेगा जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी और (शुद्ध) साफ़ घरों में जो «अदन» के स्वर्ग में होंगे, यह बहुत बड़ी कामयाबी है।

وَاُخْرٰى تُحِبُّوْنَهَا ۭ نَصْرٌ مِّنَ اللّٰهِ وَفَتْحٌ قَرِيْبٌ ۭ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ⑬

१३. और तुम्हें एक दूसरा (उपहार) भी देगा जिसे तुम चाहते हो, वह अल्लाह की मदद और जल्द फ़त्ह है, और ईमानवालों को ख़ुशख़बरी दे दो।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْٓا اَنْصَارَ اللّٰهِ كَمَا قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ لِلْحَوَارِيّٖنَ مَنْ اَنْصَارِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ۭ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ فَاٰمَنَتْ طَّاۗىِٕفَةٌ مِّنْۢ بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ وَكَفَرَتْ طَّاۗىِٕفَةٌ ۚ فَاَيَّدْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلٰي عَدُوِّهِمْ فَاَصْبَحُوْا ظٰهِرِيْنَ ⑭

१४. हे ईमानवालो! तुम अल्लाह (तआला) की मदद करने वाले बन जाओ,[1] जिस तरह (हज़रत) मरियम के पुत्र (हज़रत) ईसा ने हवारियों (मित्रों) से कहा कि कौन है जो अल्लाह के रास्ते में मेरा मददगार बने। (उन के) मित्रों ने कहा कि हम अल्लाह के रास्ते में मददगार हैं तो इस्राईल की औलाद में से एक गुट तो ईमान लाया और एक गुट ने कुफ़्र किया[2] तो हम ने ईमानवालों की उन के दुश्मनों की तुलना में मदद की, तो वे विजयी हो गये।

---

[1] सभी हालतों में अपने वादों और अमलों के ज़रिये भी और धन और जान के द्वारा भी, जब भी जिस समय भी और जिस हालत में भी अल्लाह और उसका रसूल अपने धर्म की सहायता (मदद) के लिए पुकारे तुम तुरन्त उनकी पुकार पर कहो कि हम मौजूद हैं, जैसे हवारियों ने ईसा की पुकार पर कहा।

[2] यह यहूदी थे जिन्होंने ईसा ﷺ की नबूअत (दूतत्व) का इंकार ही नहीं किया बल्कि उन पर और उन की माँ पर लांक्षन (इल्ज़ाम) भी लगाया। कुछ कहते हैं कि यह मतभेद (इख़्तिलाफ़) और बिखराव उस समय हुआ जब हज़रत ईसा को आसमान पर उठा लिया गया। एक ने कहा कि ईसा के रूप में अल्लाह (प्रभु) ही धरती पर प्रकट हुआ था (जैसे सनातन धर्म में ईशदूतों को अवतार मानते हैं) अब वह फिर आकाश पर चला गया, यह सम्प्रदाय (फ़िर्क़ा) «याक़ूबिया» कहलाता है, नस्तूरिया फ़िर्क़ा ने कहा कि वह अल्लाह के पुत्र थे, पिता ने पुत्र को आकाश पर बुला लिया। तीसरे ने कहा कि वह अल्लाह के भक्त (बंदे) और उसके संदेष्टा (रसूल) थे, यही फ़िर्क़ा सही था।

सूरतुल जुमअ:-६२

سُوْرَةُ الْجُمُعَةِ

सूर: जुमअ:* मदीने में नाज़िल हुई, इस में ग्यारह आयतें और दो रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. आकाशों और धरती की सभी चीज़े अल्लाह (तआला) की पवित्रता (तस्बीह) बयान करती हैं, जो बादशाह और बड़ा पाक (है) ग़ालिब (और) हिक्मत वाला है।

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿1﴾

२. वही है जिस ने अनपढ़ लोगों में उन ही में से एक रसूल भेजा, जो उन्हें उस की आयतें पढ़ कर सुनाता है और उन को पाक करता है और उन्हें किताब और ज्ञान (हिक्मत) सिखाता है, बेशक ये उस से पहले साफ़ (स्पष्ट) भटकावे में थे।

هُوَ الَّذِيْ بَعَثَ فِي الْأُمِّيّٖنَ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَإِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿2﴾

३. और दूसरों के लिए भी उन्हीं में से जो अब तक उन से नहीं मिले, और वही ग़ालिब (और) हिक्मत वाला है।

وَّاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿3﴾

४. यह अल्लाह की कृपा (फ़ज़्ल) है जिसे चाहे अपनी कृपा अता करे और अल्लाह (तआला) बड़ा कृपालु (फ़ज़्ल वाला) है।

ذٰلِكَ فَضْلُ اللهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَاءُ وَاللهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿4﴾

* नबी ﷺ जुमअ: की नमाज़ में सूर: जुमअ: और मुनाफ़िक़ून पढ़ा करते थे। (सहीह मुस्लिम, किताबुल जुमअ:, बाबु मा युकरउ फ़ी सलातिल जुमअ:) फिर भी इन का जुमअ: की रात को ईशा की नमाज़ में पढ़ना सहीह रिवायत से सिद्ध (साबित) नहीं। हां, एक कमज़ोर रिवायत में ऐसा आता है। (लिसानुल मीज़ान ले इब्ने हजर, तर्जुमा सईद बिन सम्माक बिन हरब)

مَثَلُ الَّذِيْنَ حُمِّلُوا التَّوْرٰىةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوْهَا كَمَثَلِ الْحِمَارِ يَحْمِلُ اَسْفَارًا ؕ بِئْسَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿5﴾

५. जिन लोगों को तौरात के (अनुसार) काम करने का हुक्म दिया गया फिर उन्होंने उस पर काम नहीं किया, उनकी मिसाल उस गधे जैसी है जो बहुत सी किताब लादे हो ।[1] अल्लाह की बातों को झुठलाने वालों की बहुत बुरी मिसाल है, और अल्लाह ऐसे ज़ालिमों को मार्गदर्शन (हिदायत) नहीं देता ।

قُلْ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ هَادُوْۤا اِنْ زَعَمْتُمْ اَنَّكُمْ اَوْلِيَآءُ لِلّٰهِ مِنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿6﴾

६. कह दीजिए कि ऐ यहूदियो! अगर तुम्हारा दावा है कि तुम अल्लाह के दोस्त हो दूसरे लोगों के सिवाय, तो तुम मौत की कामना (तमन्ना) करो अगर तुम सच्चे हो ।

وَلَا يَتَمَنَّوْنَهٗۤ اَبَدًۢا بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿7﴾

७. यह मौत की तमन्ना कभी नहीं करेंगे उन अमलों की वजह से जो अपने हाथों अपने पहले भेज रखे हैं[2] और अल्लाह (तआला) ज़ालिमों को अच्छी तरह जानता है ।

قُلْ اِنَّ الْمَوْتَ الَّذِىْ تَفِرُّوْنَ مِنْهُ فَاِنَّهٗ مُلٰقِيْكُمْ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿8﴾

८. कह दीजिए कि जिस मौत से तुम भाग रहे हो वह तो तुम तक ज़रूर पहुँचेगी, फिर तुम सब छिपी और खुली बातों के जानने वाले (अल्लाह) की तरफ़ लौटाये जाओगे और फिर वह तुम्हें तुम्हारे किये हुए सभी अमलों को बता देगा ।

---

[1] أَسْفَار (अस्फ़ार) سِفْر (सिफ़र) का बहुवचन (जमा) है, मायने है बड़ी किताब । किताब जब पढ़ी जाती है तो इंसान उस के मायनों में यात्रा (सफ़र) करता है, इसलिए किताब को भी यात्रा कहा जाता है, (फ़तहुल क़दीर)। यह निष्कर्म (बेअमल) यहूदियों की मिसाल दी गई है कि जिस तरह गधे को ज्ञान (इल्म) नही होता कि उस के ऊपर जो किताबें लदी हुई हैं उन में क्या लिखा है? या उस पर किताबें लदी हैं या कूड़ा-करकट । इसी तरह यह यहूदी हैं, यह तौरात तो लिये फिरते हैं, उसे पढ़ने और याद करने की बातें भी करते हैं, लेकिन उसे समझते हैं न उसके आदेशानुसार (अहकाम के मुताबिक) कर्म (अमल) करते हैं, बल्कि उस में फेर-बदल और तहरीफ़ से काम लेते हैं, इसीलिए हक़ीक़त में यह गधे से भी बुरे है ।

[2] यानी कुफ़्र, नाफ़रमानी और अल्लाह की किताब में जो हेर-फेर और बदलाव ये करते रहे हैं, उन की वजह से कभी भी यह मौत की कामना (तमन्ना) नही करेंगे ।

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نُوْدِيَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ يَّوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ وَ ذَرُوا الْبَيْعَ ۭ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝

९. हे वह लोगो जो ईमान लाये हो! जुमअ: के दिन (शुक्रवार को) नमाज़ की अज़ान दी जाये तो तुम अल्लाह की याद की तरफ़ जल्द आ जाया करो और क्रय-विक्रय (ख़रीद-फ़रोख़्त) छोड़ दो,[1] यह तुम्हारे पक्ष (हक़) में बहुत अच्छा है अगर तुम जानते हो।

فَاِذَا قُضِيَتِ الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوْا فِي الْاَرْضِ وَابْتَغُوْا مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝

१०. फिर जब नमाज़ हो जाये तो धरती पर फैल जाओ और अल्लाह की कृपा (फ़ज़्ल) को खोजो,[2] और अल्लाह का बहुत ज़्यादा वर्णन (ज़िक्र) करो ताकि तुम कामयाबी हासिल कर लो।

وَ اِذَا رَاَوْا تِجَارَةً اَوْ لَهْوَا انْفَضُّوْٓا اِلَيْهَا وَتَرَكُوْكَ قَآئِمًا ۭ قُلْ مَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ مِّنَ اللَّهْوِ وَمِنَ التِّجَارَةِ ۭ وَاللّٰهُ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ۝

११. और जब कोई सौदा बिकता देखें या कोई तमाशा दिखायी पड़ जाये तो उसकी तरफ़ दौड़ जाते हैं और आप को खड़ा ही छोड़ देते हैं। (आप) कह दीजिए कि अल्लाह के पास जो कुछ है वह खेल और व्यापार (तिजारत) से अच्छा है, और अल्लाह (तआला) सब से अच्छा जीविका (रिज़्क़) देने वाला है।

सूरतुल मुनाफ़िक़ून-६३

سُوْرَةُ الْمُنٰفِقُوْنَ

सूर: मुनाफ़िक़ून मदीने में नाज़िल हुई, इस में ग्यारह आयतें और दो रूकूअ़ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

[1] यह «अज़ान» कैसे दी जाये और इस के शब्द (अलफ़ाज़) क्या हों? यह क़ुरआन में कहीं नहीं है, हाँ! हदीस में है, जिस से मालूम हुआ कि क़ुरआन बिना हदीस के समझना मुमकिन है न उस पर कार्यरत (अमल) होना ही। जुमअ: को जुमअ: इसलिए कहते हैं कि उस दिन अल्लाह हर सृष्टि (मख़लूक़) को पैदा कर के पैदाईश के काम से फ़ारिग़ हो गया था, ऐसे मानो उस दिन पूरी मख़लूक़ जमा हो गई, या नमाज़ के लिये लोग जमा होते हैं।

[2] इस से मुराद कारोबार और व्यापार है, यानी जुमअ: की नमाज़ पढ़कर फिर अपने काम-धंधे में लग जाओ। उद्देश्य (मक़सद) यह बताना है कि जुमअ: के दिन कारोबार बंद रखने की ज़रूरत नहीं, सिर्फ़ नमाज़ के समय ऐसा करना आवश्यक (फ़र्ज़) है।

إِذَا جَآءَكَ الْمُنٰفِقُوْنَ قَالُوْا نَشْهَدُ إِنَّكَ لَرَسُوْلُ اللّٰهِ ۘ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ إِنَّكَ لَرَسُوْلُهٗ ۗ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ إِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَكٰذِبُوْنَ ﴿١﴾

१. तेरे पास जब मुनाफिक आते हैं तो कहते हैं कि हम इस बात के गवाह हैं कि बेशक आप अल्लाह के रसूल हैं,[1] और अल्लाह (तआला) जानता है कि आप बेशक उस के रसूल हैं, और अल्लाह गवाही देता है कि मुनाफिक निश्चित रूप (यक़ीनी तौर) से झूठे हैं।

اِتَّخَذُوْٓا أَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۗ إِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢﴾

२. उन्होंने अपनी क़समों को ढाल बना रखा है तो अल्लाह के रास्ते से रुक गये[2] बेशक बुरा है वह काम जिसे ये कर रहे हैं।

ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا فَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ﴿٣﴾

३. यह इस वजह से है कि ये ईमान लाकर दोबारा काफिर हो गये,[3] तो उन के दिलों पर मोहर लगा दी गई, अब ये नहीं समझते।

وَإِذَا رَأَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ أَجْسَامُهُمْ ۖ وَإِنْ يَّقُوْلُوْا تَسْمَعْ لِقَوْلِهِمْ ۖ كَأَنَّهُمْ خُشُبٌ مُّسَنَّدَةٌ ۖ يَحْسَبُوْنَ كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ ۚ هُمُ الْعَدُوُّ فَاحْذَرْهُمْ ۚ قَاتَلَهُمُ اللّٰهُ ۖ أَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٤﴾

४. और जब आप उन्हें देख लें तो उन के शरीर (जिस्म) आप को आकर्षक (लुभावना) मालूम हों, और जब ये बातें करने लगें तो उनकी बातों पर आप (अपना) कान लगायें, जैसाकि ये लकड़ियाँ हैं दीवार के सहारे से लगायी हुई,[4] (वे) हर (ऊँची) आवाज को अपने खिलाफ़ समझते हैं। वही वास्तविक (हक़ीक़ी) दुश्मन हैं, उन से बचो, अल्लाह उन्हें नाश करे! कहाँ फिरे जाते हैं।

---

[1] मुनाफिकून से मुराद अब्दुल्लाह बिन उबैय और उस के साथी हैं, ये जब नबी ﷺ की सेवा (खिदमत) में हाजिर होते तो क़समें खा-खाकर कहते कि आप ﷺ अल्लाह के रसूल हैं।

[2] दूसरा अनुवाद (तर्जुमा) यह है कि इन्होंने शक और शुब्हा पैदा करके अल्लाह के रास्ते से रोका।

[3] इस से मालूम हुआ कि अवसरवादी (मुनाफ़िक़) भी वाज़ेह काफ़िर हैं।

[4] यानी अपने जिस्मानी डील-डौल और ज़ाहिरी शक्ल व सूरत और भलाई की कमी में ऐसे हैं जैसे दीवार पर लगाई लकड़ियाँ हों, जो देखने में तो भली लगती हैं लेकिन किसी को फ़ायेदा नहीं पहुँचा सकतीं या यह मुब्तिदा है और इसका विषय लुप्त (पोशीदा) है और मतलब यह है कि यह रसूलुल्लाह ﷺ की सभा में ऐसे बैठते हैं जैसे दीवार से लगी लकड़ियाँ हैं, जो कोई बात समझती हैं न जानती हैं। (फ़तहुल क़दीर)

५. और जब उन से कहा जाता है कि आओ तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल तौबा करें तो अपने सिर मोड़ लेते हैं, और आप उन्हें देखेंगे कि वे गर्व (फ़ख़्र) करते हुए रूक जाते हैं।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُولُ اللَّهِ لَوَّوْا رُءُوسَهُمْ وَرَأَيْتَهُمْ يَصُدُّونَ وَهُم مُّسْتَكْبِرُونَ ﴿5﴾

६. उन के पक्ष (हक़) में आप का माफ़ी की प्रार्थना (दुआ) करना और न करना दोनों बराबर है, अल्लाह (तआला) उनको कभी माफ़ न करेगा,[1] बेशक अल्लाह (तआला ऐसे) फ़ासिकों (अवज्ञाकारियों) को रास्ता नहीं दिखाता।

سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ أَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ لَن يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ﴿6﴾

७. यही वे हैं जो कहते हैं कि जो लोग अल्लाह के रसूल के पास हैं, उन पर कुछ ख़र्च न करो, यहां तक कि वे इधर-उधर हो जायें, हालांकि आकाशों और धरती के सारे ख़ज़ाने अल्लाह ही का स्वामित्व (मिल्कियत) है लेकिन ये मुनाफ़िक़ समझते नहीं।

هُمُ الَّذِينَ يَقُولُونَ لَا تُنفِقُوا عَلَىٰ مَنْ عِندَ رَسُولِ اللَّهِ حَتَّىٰ يَنفَضُّوا وَلِلَّهِ خَزَائِنُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَٰكِنَّ الْمُنَافِقِينَ لَا يَفْقَهُونَ ﴿7﴾

८. ये कहते हैं कि अगर हम अब लौटकर मदीने जायेंगे तो इज़्ज़त वाला वहां से बेइज़्ज़त को निकाल देगा।[2] (सुनो !) सम्मान तो केवल अल्लाह (तआला) के लिए और उस के रसूल के लिए और ईमानवालों के लिए है,[3] लेकिन ये

يَقُولُونَ لَئِن رَّجَعْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ لَيُخْرِجَنَّ الْأَعَزُّ مِنْهَا الْأَذَلَّ وَلِلَّهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُولِهِ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَلَٰكِنَّ الْمُنَافِقِينَ لَا يَعْلَمُونَ ﴿8﴾

---

[1] अगर इसी निफ़ाक़ की हालत में मर गये तो उन के लिए माफ़ी नहीं। हां, अगर वह जीवन में कुफ़्र और निफ़ाक़ से तौबा कर लें तो और बात है, फिर उन के लिए क्षमा मुमकिन है।

[2] इसका कहने वाला मुनाफ़िक़ों का प्रमुख (सरदार) अब्दुल्लाह बिन उबैय था, बाइज़्ज़त से उसका मक़सद था वह ख़ुद और उस के साथी और बेइज़्ज़त से (अल्लाह की पनाह!) रसूलुल्लाह ﷺ और मुसलमान।

[3] यानी इज़्ज़त और प्रभुत्व (ग़ल्बा) केवल अल्लाह के लिए है, वह अपनी तरफ़ से जिसको चाहे इज़्ज़त और ग़ल्बा दे, जैसे कि वह अपने रसूलों और उन पर ईमान लाने वालों को इज़्ज़त और कामयाबी अता करता है, न कि उन को जो नाफ़रमान हों। यह मुनाफ़िक़ों के क़ौल का खंडन (तरदीद) किया है कि इज़्ज़त का मालिक केवल अल्लाह तआला है और बाइज़्ज़त (सम्मानित) भी वही है जिसे वह बाइज़्ज़त समझे, न कि वह जो ख़ुद को बाइज़्ज़त या जिसे दुनिया वाले बाइज़्ज़त समझें। अल्लाह के क़रीब बाइज़्ज़त सिर्फ़ और सिर्फ़ ईमानवाले होंगे, काफ़िर और मुनाफ़िक़ नहीं।

द्वयवादी (मुनाफ़िक़ीन) जानते नहीं।

يَآيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿9﴾

९. हे ईमानवालो! तुम्हारा धन और तुम्हारी औलाद तुम्हें अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल न कर दें,[1] और जो ऐसा करें वे बड़े ही नुक़सान उठाने वाले लोग हैं।

وَاَنْفِقُوْا مِنْ مَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُوْلَ رَبِّ لَوْلَآ اَخَّرْتَنِيْٓ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ فَاَصَّدَّقَ وَاَكُنْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿10﴾

१०. और जो कुछ हम ने तुम्हें अता कर रखा है, उस में से (हमारे रास्ते में) उस से पहले ख़र्च करो[2] कि तुम में से किसी को मौत आ जाये, तो कहने लगे कि हे मेरे रब! मुझे तू थोड़ी देर की छूट क्यों नहीं देता ?[3] कि मैं दान दूँ और सदाचारी (सालेहीन) लोगों में से हो जाऊँ।

وَلَنْ يُّؤَخِّرَ اللّٰهُ نَفْسًا اِذَا جَآءَ اَجَلُهَا ۭ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿11﴾

११. और जब किसी का निर्धारित (मुक़र्रर) समय आ जाता है फिर उसे अल्लाह (तआला) कभी मौक़ा नहीं देता, और जो कुछ तुम करते हो, उसे अल्लाह (तआला) अच्छी तरह जानता है।

---

[1] यानी माल और औलाद की मुहब्बत का तुम पर इतना असर न हो जाये कि तुम अल्लाह के वतलाये हुए हुक्मों और कर्तव्यों से बेफ़िक्र हो जाओ और अल्लाह की मुक़र्रर की हुई हलाल (वैध) और हराम (अवैध) की सीमाओं (हदों) की फ़िक्र न करो। मुनाफ़िक़ों की चर्चा के बाद तुरन्त इस चेतावनी (तंबीह) का मक़सद यह है कि यह मुनाफ़िक़ों का तरीक़ा है, जो इंसान को नुक़सान में डालने वाला है। ईमानवालों का तरीक़ा इस के उल्टा होता है और वह यह है कि वह हर पल अल्लाह को याद रखते हैं, यानी उसके हुक्मों और अनिवार्यताओं (वाजिबों) का पालन और हलाल और हराम में अन्तर (फ़र्क़) करते हैं।

[2] ख़र्च करने का मतलब ज़कात देने और दूसरे अच्छे कामों में ख़र्च करना है।

[3] इस से मालूम हुआ कि ज़कात (धर्मदान) देने और अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने और इसी तरह अगर हज करने का सामर्थ्य (क़ुदरत) हो तो उसे अदा करने में देर नहीं करनी चाहिए, इसलिए की मौत पता नहीं कब आ जाये और यह फ़र्ज़ उस के ऊपर रह जाये, मौत के समय कामना (तमन्ना) करने का कोई फ़ायेदा नहीं होगा।

सूरतुत तग़ाबुन-६४

سُوْرَةُ التَّغَابُنِ

सूर: तग़ाबुन मदीने में नाज़िल हुई और इस में अट्ठारह आयतें और दो रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. आकाशों और धरती की हर चीज़ अल्लाह की पवित्रता (तस्बीह) बयान करती हैं, उसी का राज्य (मुल्क) है और उसी की प्रशंसा (तारीफ़) है और वह हर चीज़ पर सामर्थ्यवान (क़ादिर) है।

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ ۫ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ⓵

२. उसी ने तुम्हें पैदा किया है, तो तुम में से कुछ तो काफ़िर हैं और कुछ ईमानवाले हैं, और जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह (तआला) अच्छी तरह देख रहा है।[1]

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَّمِنْكُمْ مُّؤْمِنٌ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ⓶

३. उसी ने आकाशों को और धरती को हक़ के साथ (दानाई और हिक्मत) से पैदा किया, उसी ने तुम्हारे रूप बनाये और बहुत सुन्दर बनाये और उसी की तरफ़ लौटना है।

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ ۚ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ⓷

४. वह आसमानों और ज़मीन की सभी चीज़ों का ज्ञान (इल्म) रखता है और जो कुछ तुम छिपा रखो और जो ज़ाहिर करो वह (सब को) जानता है। अल्लाह तो सीनों तक की बातों को जानने वाला है।

يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ⓸

---

[1] यानी इंसान के लिए नेकी, पाप, भलाई, बुराई, कुफ़्र और ईमान के रास्तों को साफ़ करने के बाद अल्लाह ने इंसान को इच्छा और पसन्द का अधिकार (इख़्तियार) दिया, जिस के अनुसार किसी ने कुफ़्र और किसी ने ईमान का रास्ता अपनाया है, उस ने किसी पर दबाव नहीं डाला, अगर वह दबाव डालता तो कोई कुफ़्र और पाप का रास्ता अपनाने पर क़ादिर ही नहीं होता, लेकिन इस तरह से इंसान का इम्तेहान मुमकिन (संभव) नहीं था, जबकि अल्लाह की मर्ज़ी इंसान का इम्तेहान लेना था।

أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِينَ كَفَرُوا مِن قَبْلُ فَذَاقُوا وَبَالَ أَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿5﴾

५. क्या तुम्हारे पास इस से पहले के काफ़िरों की ख़बर नहीं पहुँची, जिन्होंने अपने अमलों के नतीजा का मज़ा चख लिया और जिन के लिए कष्टदायी (तक़लीफ़दह) अज़ाब है?

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُ كَانَت تَّأْتِيهِمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَقَالُوا أَبَشَرٌ يَهْدُونَنَا فَكَفَرُوا وَتَوَلَّوا وَّاسْتَغْنَى اللَّهُ ۚ وَاللَّهُ غَنِيٌّ حَمِيدٌ ﴿6﴾

६. यह इसलिए कि उन के पास उन के रसूल वाज़ेह दलायल (चमत्कार) लेकर आये तो उन्होंने कह दिया कि क्या इंसान हमारी हिदायत करेगा?[1] तो इंकार कर दिया और मुँह फेर लिया और अल्लाह ने भी बेनियाज़ी की, और अल्लाह तो है ही बड़ा बेनियाज़ सभी गुणों (सिफ़्तों) वाला।

زَعَمَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَن لَّن يُبْعَثُوا ۚ قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلْتُمْ ۚ وَذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿7﴾

७. उन काफ़िरों ने भ्रम (गुमान) किया है कि दोबारा ज़िन्दा न किये जायेंगे, आप कह दीजिए कि क्यों नहीं, अल्लाह की क़सम ! तुम ज़रूर फिर से ज़िन्दा किये जाओगे,[2] फिर जो कुछ तुम ने किया है उस की ख़बर दिये जाओगे, और अल्लाह (तआला) के लिए यह बहुत ही आसान है।

فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَالنُّورِ الَّذِي أَنزَلْنَا ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿8﴾

८. तो तुम अल्लाह पर और उस के रसूल पर और उस ज्योति (नूर) पर जिसे हम ने नाज़िल किया है ईमान लाओ, और अल्लाह तआला तुम्हारे हर अमल से बाख़बर है।

---

[1] यह उन के कुफ़्र की वजह है कि उन्होंने यह कुफ़्र, जो दोनों लोक में उनकी यातना (सज़ा) की वजह बना, इसलिए अपनाया कि उन्होंने एक इंसान को अपना मार्गदर्शक (रहनुमा) मानने से इंकार कर दिया, यानी एक इंसान का रसूल बनकर लोगों की रहनुमाई और हिदायत के लिए आना उन के लिए नाक़ाबिले क़ुबूल (अस्वीकार्य) था, जैसाकि आज भी बिदअतियों के लिये रसूल को इंसान मानना बड़ा भारी और कठिन है। هداهم الله تعالى

[2] पाक क़ुरआन की तीन जगहों पर अल्लाह तआला ने अपने रसूल को यह हुक्म दिया है कि अल्लाह की क़सम लेकर यह एलान करो कि अल्लाह ज़रूर दोबारा ज़िन्दगी देगा, उन में से एक यह स्थान (जगह) है और इस से पहले एक जगह सूरह यूनुस आयत ५३ और दूसरा सूरह सबा आयत ३ है।

يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ذَٰلِكَ يَوْمُ التَّغَابُنِ ۗ وَمَن يُؤْمِن بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ وَيُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿9﴾

९. जिस दिन तुम सब को उस जमा होने के दिन[1] जमा करेगा, वही दिन है हार और जीत का, और जो (इंसान) अल्लाह पर ईमान लाकर नेक काम करे अल्लाह उस से उसकी बुराईयाँ दूर कर देगा और उसे स्वर्गों में ले जायेगा जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, जिस में वे हमेशा रहेंगे, यही बहुत बड़ी कामयाबी है।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿10﴾

१०. और जिन लोगों ने कुफ्र किया और हमारी आयतों को झुठलाया वे सभी नरक में जाने वाले हैं, जिस में वे हमेशा रहेंगे, वह बहुत बुरी जगह है।

مَا أَصَابَ مِن مُّصِيبَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۗ وَمَن يُؤْمِن بِاللَّهِ يَهْدِ قَلْبَهُ ۚ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿11﴾

११. कोई मुसीबत अल्लाह की आज्ञा (इजाजत) के बिना नहीं पहुँच सकती, और जो अल्लाह पर ईमान लाये अल्लाह उस के दिल को मार्गदर्शन (हिदायत) देता है[2] और अल्लाह हर चीज को अच्छी तरह जानने वाला है।

وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ ۚ فَإِن تَوَلَّيْتُمْ فَإِنَّمَا عَلَىٰ رَسُولِنَا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿12﴾

१२. (लोगो!) अल्लाह के हुक्म की पैरवी करो और रसूल के हुक्म का पालन करो, फिर अगर तुम विमुख (मुँह फेरने वाले) हुए तो हमारे रसूल का फ़र्ज केवल साफ़ तौर से पहुँचा देना है।

---

[1] क़यामत को यौमुल जमअ (जमा होने का दिन) इसलिए कहा कि उस दिन शुरू से आख़िर तक के सभी लोग एक ही मैदान में जमा होंगे। फ़रिश्ता पुकारेगा तो सब उसकी पुकार सुनेंगे, हर एक की नजर आख़िर तक पहुँच जायेगी, क्योंकि बीच में कोई चीज आड़ न बनेगी, जैसे दूसरी जगह पर फ़रमाया :

﴿قُلْ إِنَّ الْأَوَّلِينَ وَالْآخِرِينَ ۝ لَمَجْمُوعُونَ إِلَىٰ مِيقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُومٍ﴾

"आप (ﷺ) कह दीजिए कि बेशक सभी अगले और पिछले जरूर जमा किये जायेंगे, एक निर्धारित (मुक़र्रर) दिन के समय।" (अल-वाक़िअ: ४९, ५०)

[2] यानी वह जान लेता है कि जो कुछ उसे पहुँचता है अल्लाह के चाहने ही से पहुँचता है, इसलिए वह सब्र और तक़दीर पर ख़ुशी जाहिर करता है। इब्ने अब्बास रजि अल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि उस के दिल में पक्का यक़ीन कर देता है जिस से वह जान लेता है कि उसको पहुँचने वाली चीज उससे चूक नहीं सकती और जो चूक जाने वाली है उसे पहुँच नहीं सकती। (इब्ने कसीर)

१३. अल्लाह के सिवाय कोई सच्चा माबूद नहीं और ईमानवालो को केवल अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए ।[1]

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ⑬

१४. हे ईमानवालो! तुम्हारी कुछ पत्नियाँ और कुछ सन्तानें (औलादें) तुम्हारे दुश्मन हैं[2] तो उन से होशियार रहना और अगर तुम माफ़ कर दो और छोड़ दो और माफ़ कर दो तो अल्लाह (तआला) माफ़ करने वाला रहीम है ।[3]

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ مِنْ اَزْوَاجِكُمْ وَاَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَّكُمْ فَاحْذَرُوْهُمْ ۚ وَاِنْ تَعْفُوْا وَتَصْفَحُوْا وَتَغْفِرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ⑭

१५. तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद (तो बिल्कुल) तुम्हारी परीक्षा (इम्तेहान) हैं[4] और बहुत बड़ा बदला अल्लाह के पास है ।

اِنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۭ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ⑮

१६. तो जहाँ तक तुम से हो सके अल्लाह से डरते रहो और सुनते और आज्ञापालन (इताअत) करते चलो और (अल्लाह के रास्ते में) दान करते रहो जो तुम्हारे लिए बेहतर है, और जो लोग अपने नफ़्स की लालच से सुरक्षित (महफ़ूज) रखे गये वही कामयाब हैं ।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَاسْمَعُوْا وَاَطِيْعُوْا وَاَنْفِقُوْا خَيْرًا لِّاَنْفُسِكُمْ ۭ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ⑯

---

[1] यानी सभी मामले अल्लाह को समर्पित (सिपुर्द) करें, उसी पर यक़ीन करें और केवल उसी से दुआ करें, क्योंकि उस के सिवा कोई कारसाज़ और संकटहारी (मुश्किलकुशा) नहीं है ।

[2] यानी जो तुम्हें नेकी के कामों और अल्लाह के आज्ञापालन (इताअत) से रोके, समझ लो कि वह तुम्हारे हितकारी नहीं दुश्मन हैं ।

[3] इस के अवतरित (नाज़िल) होने की वजह यह बताई गई है कि मक्का में मुसलमान होने वाले कुछ मुसलमानों ने मक्का छोड़कर मदीना आने का इरादा किया, जैसाकि उस समय हिजरत का हुक्म बलपूर्वक दिया गया था, लेकिन उनकी पत्नियाँ और बच्चे रुकावट बन गये और उन्होंने उन्हें हिजरत नहीं करने दिया, फिर जब बाद में वह रसूलुल्लाह ﷺ के पास आ गये तो देखा कि उन से पहले आने वालों ने धर्म में बहुत समझ प्राप्त (हासिल) कर ली है तो उन्हें अपनी पत्नियों और बच्चों पर ग़ुस्सा आया, जिन्होंने उन्हें हिजरत से रोका था, इसलिए उन्हें सज़ा देने की सोची, अल्लाह ने इस में उन्हें माफ़ कर देने और छोड़ देने का हुक्म दिया । (तिर्मिज़ी, तफ़सीर सूरह तग़ाबुन)

[4] जो तुम्हें हराम कमाई पर उभारते हैं और अल्लाह का हक़ पूरा करने से रोकते हैं, तो इस इम्तेहान में तुम उसी समय सफल हो सकते हो जब तुम अल्लाह की अवज्ञा (नाफ़रमानी) में उनका अनुसरण (इत्तेबा) न करो । मतलब यह हुआ कि माल और औलाद जहाँ अल्लाह के तोहफ़े हैं, वहीं यह इंसान के इम्तिहान के साधन (ज़रिया) भी हैं, इस ढंग से अल्लाह देखता है कि मेरा आज्ञाकारी (फ़रमाँबरदार) कौन है और अवज्ञाकारी (नाफ़रमान) कौन?

إِن تُقْرِضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا يُضَٰعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۚ وَاللَّهُ شَكُورٌ حَلِيمٌ ﴿17﴾

१७. अगर तुम अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दोगे (यानी उस के रास्ते में ख़र्च करोगे) तो वह उसे तुम्हारे लिए बढ़ाता जायेगा और तुम्हारे गुनाह भी माफ़ कर देगा और अल्लाह बड़ा क़द्रदान और सहन करने वाला है।

عَٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَٰدَةِ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿18﴾

१८. वह छिपी और खुली का जानने वाला, ज़बरदस्त और हिक्मत वाला है।

سُورَةُ الطَّلَاقِ

सूरतुत्तलाक़-६५

सूर: तलाक़ मदीने में नाज़िल हुई, इसमें बारह आयतें और दो रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

يَٰٓأَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَطَلِّقُوهُنَّ لِعِدَّتِهِنَّ وَأَحْصُوا الْعِدَّةَ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ رَبَّكُمْ ۖ لَا تُخْرِجُوهُنَّ مِنۢ بُيُوتِهِنَّ وَلَا يَخْرُجْنَ إِلَّآ أَن يَأْتِينَ بِفَٰحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ۚ وَتِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ ۚ وَمَن يَتَعَدَّ حُدُودَ اللَّهِ فَقَدْ

१. हे नबी! (अपनी उम्मत से कहो) जब तुम अपनी पत्नियों को तलाक़ देना चाहो तो उनकी इद्दत (मुद्दत के शुरू) में उन्हें तलाक़ दो और इद्दत की गिनती रखो,[2] और अल्लाह से जो तुम्हारा रब है डरते रहो, न तुम उन्हें उन के घरों से निकालो,[3] और न वे (ख़ुद) निकलें,[4] हां, यह दूसरी बात है कि वह खुली बुराई कर बैठें। यह अल्लाह की मुक़र्रर की हुई सीमायें (हदें) हैं, और जो इंसान अल्लाह की हदों को

---

[1] नबी ﷺ से संबोधन आप की श्रेष्ठता (फ़ज़ीलत) और प्रतिष्ठा (शरफ़) की वजह है, नहीं तो हुक्म तो पैरोकारों को दिया जा रहा है, या आप ही को ख़ास तौर से संबोधित (मुख़ातिब) किया गया है और बहुवचन (जमा) का इस्तेमाल इज़्ज़त की वजह से है और पैरोकारों के लिए आप का नमूना ही काफ़ी है। طَلَّقْتُم का मतलब है जब तलाक़ देने का पक्का इरादा कर लो।

[2] यानी उस के शुरू और आख़िर का ध्यान रखो, ताकि स्त्री उस के बाद दूसरा विवाह कर सके, या अगर तुम ही फिर रखना चाहो (पहली और दूसरी तलाक़ की हालत में) तो इद्दत (अवधि) के भीतर फिर रख सको।

[3] यानी तलाक़ देते ही स्त्री को अपने घर से न निकालो, बल्कि इद्दत तक उसे घर ही में रहने दो, और उस समय तक रहने और खाने और कपड़े का ख़र्च तुम्हारी ज़िम्मेदारी है।

[4] यानी इद्दत (अवधि) के भीतर स्त्री ख़ुद भी बाहर निकलने से परहेज़ करे, लेकिन यह कि कोई बहुत ज़रूरी मामला हो।

ظَلَمَ نَفْسَهٗ ؕ لَا تَدْرِیْ لَعَلَّ اللّٰهَ یُحْدِثُ بَعْدَ ذٰلِكَ اَمْرًا ①

तोड़े उस ने यक़ीनी तौर से अपने ऊपर ज़ुल्म किया, तुम नहीं जानते कि शायद उस के बाद अल्लाह (तआला) कोई नई बात पैदा कर दे।[1]

فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ فَارِقُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ وَّاَشْهِدُوْا ذَوَیْ عَدْلٍ مِّنْكُمْ وَاَقِیْمُوا الشَّهَادَةَ لِلّٰهِ ؕ ذٰلِكُمْ یُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ یُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْیَوْمِ الْاٰخِرِ ۬ؕ وَمَنْ یَّتَّقِ اللّٰهَ یَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ②

२. तो जब ये (महिलायें) अपनी अवधि (मुद्दत) पूरी करने के क़रीब पहुँच जायें तो उन्हें बाक़ायदा अपने विवाह में रहने दो या बाक़ायदा उन्हें अलग कर दो[2] और आपस में से दो इंसाफ़ करने वाले इंसानों को गवाह बना लो, और अल्लाह की ख़ुशी के लिए ठीक-ठाक गवाही दो,[3] यही है वह जिसकी शिक्षा (नसीहत) उन्हें दी जाती है, जो अल्लाह पर और क़यामत के दिन पर ईमान रखते हों, और जो इंसान अल्लाह से डरता है अल्लाह उस के लिए छुटकारे का रास्ता निकाल देता है।

وَّیَرْزُقْهُ مِنْ حَیْثُ لَا یَحْتَسِبُ ؕ وَمَنْ یَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بَالِغُ اَمْرِهٖ ؕ قَدْ جَعَلَ اللّٰهُ لِكُلِّ شَیْءٍ قَدْرًا ③

३. और उसे ऐसी जगह से रोज़ी उपलब्ध (मुहैय्या) कराता है जिसका उसे अंदाज़ा भी न हो, और जो इंसान अल्लाह पर भरोसा करेगा, अल्लाह उस के लिए काफ़ी होगा। अल्लाह (तआला) अपना काम पूरा करके ही रहेगा, अल्लाह (तआला) ने हर चीज़ का एक अंदाज़ा

---

[1] यानी पति के मन में तलाक़ दी हुई औरत की रूचि (रग़बत) पैदा कर दे और वह फिर से रखने पर तैयार हो जाये, जैसाकि पहली और दूसरी तलाक़ के बाद पति को अवधि (इद्दत) के भीतर फिर से रखने का हक़ है। इसलिए कुछ भाष्यकारों (मुफ़स्सिरों) का विचार है कि अल्लाह ने इस आयत में सिर्फ़ एक तलाक़ देने की शिक्षा (तालीम) दी है और एक समय में तीन तलाक़ देने से रोका है, क्योंकि अगर वह एक ही समय (वक़्त) में तीन तलाक़ दे डाले [और धर्म-विधान (शरीअत) उसे जायेज़ करके लागू भी कर दे] तो फिर यह कहना बेकार है कि शायद अल्लाह तआला कोई नई बात पैदा कर दे। (फ़तहुल क़दीर)

[2] मुतल्लक़ा मदख़ूला (जिस स्त्री से पति ने संभोग किया हो और उसे तलाक़ दिया है तो) उसकी अवधि (इद्दत) तीन माहवारी है, अगर उसे फिर से रख लेने का इरादा हो तो इद्दत (अवधि) पूरी होने से पहले-पहले रुजूअ कर लो, नहीं तो उन्हें बाक़ायदा अपने से अलग कर दो।

[3] यह गवाहों को कहा गया है कि बिना पक्षपात (जानिबदारी) और बिना लालच के सही-सही गवाही दें।

निर्धारित (मुक़र्रर) कर रखा है।

४. तुम्हारी औरतों में से जो औरतें माहवारी से मायूस हो गयी हों, अगर तुम्हें शक हो तो उनकी इद्दत तीन माह है और उनकी भी जिन्हें अभी माहवारी (हैज) शुरू ही न हुआ हो,[1] और गर्भवती (हामला) औरतों की इद्दत (अवधि) उनका बच्चे को जन्म देना है,[2] और जो इंसान अल्लाह तआला से डरेगा, अल्लाह उस के (हर) काम में आसानी पैदा कर देगा।

وَالّٰٓـِٔيْ يَىِٕسْنَ مِنَ الْمَحِيْضِ مِنْ نِّسَآىِٕكُمْ اِنِ ارْتَبْتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ ثَلٰثَةُ اَشْهُرٍ وَّالّٰٓـِٔيْ لَمْ يَحِضْنَ ؕ وَاُولَاتُ الْاَحْمَالِ اَجَلُهُنَّ اَنْ يَّضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ؕ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ اَمْرِهٖ يُسْرًا (4)

५. यह अल्लाह का हुक्म है जो उसने तुम्हारी तरफ़ उतारा है, और जो इंसान अल्लाह से डरेगा अल्लाह उस के गुनाह मिटा देगा और उसे बहुत भारी बदला देगा।

ذٰلِكَ اَمْرُ اللّٰهِ اَنْزَلَهٗٓ اِلَيْكُمْ ؕ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ وَيُعْظِمْ لَهٗٓ اَجْرًا (5)

६. तुम अपनी ताक़त के अनुसार जहाँ रहते हो वहाँ उन (तलाक़ वाली) औरतों को रखो[3] और

اَسْكِنُوْهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنْتُمْ مِّنْ وُّجْدِكُمْ

---

[1] यह उन की इद्दत (अवधि) है जिनकी माहवारी ज़्यादा उम्र की वजह से रूक गई हो या जिन्हें माहवारी आना शुरू ही नहीं हुई। मालूम है कि ऐसा कभी-कभी होता है कि स्त्री बड़ी होकर पति के साथ रहती है परन्तु उसे माहवारी नहीं आती।

[2] मुतल्लक़ा (तलाक़ शुदा औरत) अगर गर्भवती (हामला) हो तो उसकी अवधि प्रसव (विलादत) है, चाहे दूसरे दिन ही विलादत हो जाये, इस के सिवा आयत से ज़ाहिर यही है कि हर गर्भवती की यही इद्दत है चाहे वह तलाक़ शुदा हो या उसका पति मर गया हो, हदीसों से भी इसे समर्थन मिलता है (देखिए : सहीह बुख़ारी, मुस्लिम और दूसरी सुनन, किताबुत तलाक़) दूसरी स्त्रियाँ जिन के पति मर जायें उनकी इद्दत ४ महीना १० दिन है। (सूर: बक़र:-२३४)

[3] मुतल्लक़ा रजइया को (यानी दो तलाक़ तक जिस में पत्नी को मुद्दत के भीतर फिर से रख सकता है) इसलिए कि जो बायेन: है (पूरी तीन तलाक़ कई मौक़ा पर दे दिया है) उस के लिए आवास (रिहाईश) और ख़र्च ज़रूरी ही नहीं है, जैसाकि पिछले पन्नों में बयान किया गया, अपनी ताक़त के अनुसार रखने का मतलब यह है कि अगर घर बड़ा हो और उस में कई कमरे हों तो एक कमरा उस के लिए ख़ास कर दिया जाये, नहीं तो अपना कमरा उस के लिए ख़ाली कर दें। इस में हिक्मत यही है कि पास रह कर अवधि (इद्दत) पूरी करेगी तो हो सकता है कि पति को तरस आ जाये और उसे फिर से रखने की रूचि (रग़बत) मन में पैदा हो जाये, ख़ास कर के अगर बच्चे भी हों तो फिर चाहत और फिर से रख लेने की ज़्यादा उम्मीद है। लेकिन अफ़सोस की बात है कि मुसलमान इस निर्देश (हिदायत) के अनुसार काम नही करते जिस की वजह से इस हुक्म के फ़ायदे और ख़ुशी से भी वह वंचित (महरूम) हैं। हमारे समाज

وَلَا تُضَآرُّوهُنَّ لِتُضَيِّقُوا۟ عَلَيْهِنَّ ۚ وَإِن كُنَّ أُو۟لَٰتِ حَمْلٍ فَأَنفِقُوا۟ عَلَيْهِنَّ حَتَّىٰ يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ فَإِنْ أَرْضَعْنَ لَكُمْ فَـَٔاتُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ ۖ وَأْتَمِرُوا۟ بَيْنَكُم بِمَعْرُوفٍ ۖ وَإِن تَعَاسَرْتُمْ فَسَتُرْضِعُ لَهُۥٓ أُخْرَىٰ ⑥

उन्हें तंग करने के लिए कष्ट न दो और अगर वे हामिला हों तो जब तक बच्चा जन्म ले ले उन्हें ख़र्च देते रहा करो, फिर अगर तुम्हारे कहने से वही दूध पिलायें तो तुम उन्हें उनका पारिश्रमिक (उजरत) दे दो[1] और आपस में अच्छी तरह राय-मशविरा कर लिया करो और अगर तुम आपस में तनाव रखो तो उस के कहने से कोई दूसरी दूध पिलायेगी।

لِيُنفِقْ ذُو سَعَةٍ مِّن سَعَتِهِۦ ۖ وَمَن قُدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهُۥ فَلْيُنفِقْ مِمَّآ ءَاتَىٰهُ ٱللَّهُ ۚ لَا يُكَلِّفُ ٱللَّهُ نَفْسًا إِلَّا مَآ ءَاتَىٰهَا ۚ سَيَجْعَلُ ٱللَّهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُسْرًا ⑦

७. धन वाले को अपने धन के अनुसार ख़र्च करना चाहिए और जिसकी जीविका (रिज़्क़) उस के लिए कम की गयी हो तो उस को चाहिए कि जो कुछ अल्लाह (तआला) ने उसे दे रखा है, उसी में से (अपनी ताक़त के अनुसार) दे, किसी इंसान पर अल्लाह बोझ नहीं रखता लेकिन इतना ही जितनी ताक़त उसे दे रखी है।[2] अल्लाह (तआला) ग़रीबी के बाद माल भी अता (प्रदान) करेगा।[3]

में तलाक़ (विवाह-विच्छेद) के साथ ही जिस तरह औरत को तुरन्त अछूत बनाकर घर से निकाल दिया जाता है या कई बार लड़की वाले उसे अपने घर ले जाते हैं, यह रिवाज क़ुरआन करीम की खुली शिक्षा (तालीम) के ख़िलाफ़ है।

[1] यानी तलाक़ देने के बाद अगर वह तुम्हारे बच्चे को दूध पिलाये तो उसका पारिश्रमिक (उजरत) तुम्हारे ऊपर है।

[2] इसलिए वह ग़रीब और दरिद्र को यह हुक्म नहीं देता कि वह दूध पिलाने वाली को ज़्यादा ही पारिश्रमिक (उजरत) दे। मतलब इन निर्देशों (हिदायत) का यह है कि बच्चे की माँ और उसका बाप ऐसा उचित (मुनासिब) ढंग अपनायें कि एक-दूसरे को तकलीफ़ न पहुँचे और बच्चे को दूध पिलाने का मामला खटाई में न पड़े। जैसे दूसरी जगह पर फ़रमाया :

﴿لَا تُضَآرَّ وَٰلِدَةٌۢ بِوَلَدِهَا وَلَا مَوْلُودٌ لَّهُۥ بِوَلَدِهِۦ﴾

"न माँ को बच्चे की वजह से दुख पहुँचाया जाये और न बाप को।" (अल-बक़र:-२३३)

[3] इसलिए जो अल्लाह पर यक़ीन और भरोसा करते हैं, अल्लाह उन के लिए आसानी और विस्तार (कुशादगी) भी देता है।

८. और बहुत सी बस्ती (वालों) ने अपने रब के हुक्म से और उस के रसूलों की नाफ़रमानी की तो हम ने भी उन से कड़ा हिसाब लिया और अनदेखा (कठोर) अज़ाब उन पर डाल दिया।

وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ عَتَتْ عَنْ اَمْرِ رَبِّهَا وَرُسُلِهٖ فَحَاسَبْنٰهَا حِسَابًا شَدِيْدًا ۙ وَّعَذَّبْنٰهَا عَذَابًا نُّكْرًا ⑧

९. तो उन्होंने अपने करतूतों का मज़ा चख लिया और परिणाम स्वरूप (नतीजतन) उन का नुक़सान ही हुआ।

فَذَاقَتْ وَبَالَ اَمْرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ اَمْرِهَا خُسْرًا ⑨

१०. उन के लिए अल्लाह तआला ने सख़्त अज़ाब तैयार कर रखा हैं, तो अल्लाह से डरो हे अक़्लमंद ईमानवालो! निश्चित रूप (यक़ीनी तौर) से अल्लाह ने तुम्हारी तरफ़ शिक्षा (नसीहत) भेज दी है।

اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ۙ فَاتَّقُوا اللّٰهَ يٰٓاُولِي الْاَلْبَابِ ۚۖ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ قَدْ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكُمْ ذِكْرًا ⑩

११. (यानी) रसूल जो तुम्हें अल्लाह के स्पष्ट (वाज़ेह) हुक्म पढ़ कर सुनाता है ताकि उन लोगों को जो ईमान लायें और नेक काम करें, वह अँधेरे से उजाले की तरफ़ ले आये[1] और जो इंसान अल्लाह पर ईमान लाये और नेक काम करे अल्लाह उसे ऐसे स्वर्ग में प्रवेश (दाख़िला) देगा जिस के नीचे नहरें बह रही हैं, जिस में वे हमेशा-हमेश रहेंगे। बेशक अल्लाह ने उसे सब से अच्छी जीविका (रिज़्क़) दे रखी है।

رَّسُوْلًا يَّتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ مُبَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ وَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ قَدْ اَحْسَنَ اللّٰهُ لَهٗ رِزْقًا ⑪

[1] यह रसूल की ज़िम्मेदारी और फ़र्ज़ बयान किया गया है कि वह क़ुरआन के द्वारा (ज़रिये) लोगों को अख़लाक़ी गिरावट और शिर्क (बहुदेववाद) और गुमराही के अंधकारों से निकाल कर ईमान और नेकी के उजाले की तरफ़ लाता है। यहाँ رسول रसूल (संदेष्टा) से मुराद الرسول यानी मोहम्मद ﷺ हैं।

اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ وَّ مِنَ الْاَرْضِ مِثْلَهُنَّ ۗ يَتَنَزَّلُ الْاَمْرُ بَيْنَهُنَّ لِتَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا ﴿12﴾

१२. अल्लाह वह है जिसने सात आकाश बनाये और उसी की तरह धरती भी।[1] उस का हुक्म उन के बीच नाज़िल होता है[2] ताकि तुम जान लो कि अल्लाह हर चीज पर क़ादिर है, और अल्लाह (तआला) ने हर चीज को अपने ज्ञान (इल्म) की परिधि (इहाते) में घेर रखा है।[3]

سُوْرَةُ التَّحْرِيْمِ

सूरतुत्तहरीम-६६

सूर: तहरीम मदीने में नाज़िल हुई, इसमें बारह आयतें और दो रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَآ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكَ ۚ تَبْتَغِيْ مَرْضَاتَ اَزْوَاجِكَ ۗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿1﴾

१. हे नबी ! जिस चीज को अल्लाह ने आप के लिए वैध (हलाल) कर दिया है, उसे आप अवैध (हराम) क्यों करते हैं?[4] (क्या) आप अपनी

---

[1] أي خلق من الأرض مثلهن यानी सात आकाशों की तरह अल्लाह ने सात धरतियाँ भी पैदा की हैं। कुछ ने इस से सात महाद्वीप (बर्रे आज़म) मुराद लिया है, लेकिन यह सही नहीं, नहीं तो जिस तरह ऊपर तले सात आकाश हैं उसी तरह सात धरतियाँ हैं, जिन के बीच फ़र्क और दूरी है और हर धरती में अल्लाह की सृष्टि (मख़लूक़) आबाद है। (अल कुर्तबी)

[2] यानी जैसे हर आकाश पर अल्लाह का हुक्म लागू और ग़ालिब है, इसी तरह हर धरती पर उसका हुक्म चलता है, आकाशों की तरह वह सभी धरतियों की भी व्यवस्था (तदबीर) करता है।

[3] तो उस के ज्ञान (इल्म) से कोई चीज़ बाहर नहीं चाहे वह कैसी ही हो।

[4] नबी ﷺ ने जिस चीज़ को अपने लिये हराम कर लिया था वह क्या थी? जिस पर अल्लाह ने अपनी अप्रियता (नापसंदी) ज़ाहिर की, इस मामले में एक तो वह मशहूर वाक़ेआ है जो बुख़ारी और सहीह मुस्लिम वग़ैरह में रिवायत हुई है कि आप ﷺ हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश के पास कुछ देर रूकते और वहाँ शहद पीते। हज़रत हफ़सा और आयेशा (رضي الله عنهما) दोनों ने वहाँ आप ﷺ को ज़्यादा देर तक ठहरने से रोकने के लिए यह योजना बनाई कि उन में से जिस के पास भी रसूलुल्लाह ﷺ जायें तो वह उन से यह कहे कि आप के मुँह से मग़ाफ़ीर (एक तरह का फूल जिस में नापसंद बू होती है) की गंध आ रही है और उन्होंने ऐसा ही किया। आप ने फ़रमाया कि मैंने तो ज़ैनब के घर केवल शहद पिया है। अब मैं क़सम खाता हूँ कि यह नहीं पिऊँगा, लेकिन यह बात तुम किसी को बतलाना नहीं। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूरतुत तहरीम) इस से यह बात भी साफ़ हो जाती है कि अल्लाह की हलाल चीज़ों को हराम करने का हक़ किसी को भी नहीं, यहाँ तक कि रसूलुल्लाह ﷺ भी यह अधिकार (हक़) नहीं रखते।

पत्नियों की ख़ुशी हासिल करना चाहते हैं और अल्लाह माफ़ करने वाला बड़ा रहीम है।

قَدْ فَرَضَ اللّٰهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ اَيْمَانِكُمْ ۚ وَاللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿2﴾

२. बेशक अल्लाह (तआला) ने आप के लिए क़समों से निकलने का तरीक़ा मुक़र्रर कर दिया है और अल्लाह आप का कार्यक्षम (कारसाज़) है और वही (पूरा) इल्म वाला और हिक्मत वाला है।

وَاِذْ اَسَرَّ النَّبِيُّ اِلٰى بَعْضِ اَزْوَاجِهٖ حَدِيْثًا ۚ فَلَمَّا نَبَّاَتْ بِهٖ وَاَظْهَرَهُ اللّٰهُ عَلَيْهِ عَرَّفَ بَعْضَهٗ وَاَعْرَضَ عَنْۢ بَعْضٍ ۚ فَلَمَّا نَبَّاَهَا بِهٖ قَالَتْ مَنْ اَنْۢبَاَكَ هٰذَا ۭ قَالَ نَبَّاَنِيَ الْعَلِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿3﴾

३. और (याद करो) जब नबी ने अपनी कुछ पत्नियों से एक बात चुपके से कही[1] तो जब उस ने उस बात की ख़बर कर दी[2] और अल्लाह ने अपने नबी को उस पर अवगत (आगाह) कर दिया तो नबी ने कुछ बात तो बता दी और कुछ टाल गये, फिर जब नबी ने अपनी उस पत्नी को यह बात बता दी तो वह कहने लगी कि इस की ख़बर आप को किसने दी,[3] कहा कि सब कुछ जानने वाले पूरी ख़बर रखने वाले अल्लाह ने मुझे बता दिया है।[4]

اِنْ تَتُوْبَآ اِلَى اللّٰهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوْبُكُمَا ۚ وَاِنْ تَظٰهَرَا عَلَيْهِ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ مَوْلٰىهُ وَجِبْرِيْلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ وَالْمَلٰٓئِكَةُ بَعْدَ ذٰلِكَ ظَهِيْرٌ ﴿4﴾

४. (हे नबी की दोनों पत्नियो!) अगर तुम अल्लाह से माफ़ी माँग लो (तो बहुत अच्छा है) बेशक तुम्हारे दिल झुक गये हैं, और अगर तुम रसूल के ख़िलाफ़ एक-दूसरे की मदद करोगी तो बेशक उसका संरक्षक (वली) अल्लाह है और जिब्रील और नेक ईमानवाले और उन के सिवाय फ़रिश्ते भी मदद करने वाले हैं।

[1] वह छिपी बात मधु (शहद) या दासी मारिया को हराम करने वाली बात थी, जो आप ﷺ ने हज़रत हफ़सा से की थी।

[2] यानी हफ़सा ने वह बात आयेशा रज़ि अल्लाहु अन्हा को बता दी।

[3] जब नबी ﷺ ने हज़रत हफ़सा को बतलाया कि तुम ने मेरा भेद खोल दिया है तो वह हैरत में हुई, क्योंकि उन्होंने हज़रत आयेशा के सिवा किसी को यह बात नहीं बतलाई थी और आयेशा से उन्हें उम्मीद न थी कि वह आप ﷺ को बतला देंगी, क्योंकि वह मामले में साझी थीं।

[4] इस से मालूम हुआ कि क़ुरआन के सिवाय भी आप ﷺ पर प्रकाशना (वह्यी) का अवतरण (नुज़ूल) होता था।

عَسٰى رَبُّهٗۤ اِنْ طَلَّقَكُنَّ اَنْ يُّبْدِلَهٗۤ اَزْوَاجًا خَيْرًا مِّنْكُنَّ مُسْلِمٰتٍ مُّؤْمِنٰتٍ قٰنِتٰتٍ تٰٓئِبٰتٍ عٰبِدٰتٍ سٰٓئِحٰتٍ ثَيِّبٰتٍ وَّاَبْكَارًا ⑤

५. अगर वह (रसूल) तुम्हें तलाक़ दे दें तो बहुत जल्द उन्हें उन का रब तुम्हारे बदले तुम से अच्छी बीवियाँ अता करेगा, जो इस्लाम वालियाँ, ईमान वालियाँ, अल्लाह के सामने झुकने वालियाँ, माफ़ी माँगने वालियाँ, इबादत करने वालियाँ, व्रत (रोज़े) रखने वालियाँ होंगी विधवायें (बेवायें) और कुंवारियाँ ।[1]

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَاۤ اَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ⑥

६. हे ईमानवालो! तुम ख़ुद अपने को और अपने परिवार वालों को उस आग से बचाओ[2] जिस का ईंधन इंसान हैं और पत्थर, जिस पर कठोर दिल वाले सख़्त फ़रिश्ते तैनात हैं, जिन्हें जो हुक्म अल्लाह (तआला) देता है उसकी नाफ़रमानी नहीं करते बल्कि जो हुक्म दिया जाये उसका पालन (पैरवी) करते हैं ।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَعْتَذِرُوا الْيَوْمَ ؕ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ⑦

७. हे काफ़िरो! आज तुम (मजबूरी और) बहाना मत ज़ाहिर करो, तुम्हें केवल तुम्हारे कुकर्मों (बुरे आमाल) का बदला दिया जा रहा है ।

---

[1] ثَيِّبَات (सैयेबात) ثَيِّب (सय्यिब) का बहुवचन (जमा) है (लौट आने वाली) विधवा (बेवा) औरत को सय्यिब इसलिए कहा जाता है कि वह पति से वापस लौट आती है, फिर इसी तरह बिना पति के रह जाती है जैसे पहले थी । أَبْكَار (अबकार) بِكْر (बिक्र) का बहुवचन है कुंवारी स्त्री को बिक्र (नई) इसलिए कहते हैं कि यह अभी अपनी पहली हालत पर होती है जिस पर पैदा हुई है । (फ़तहुल क़दीर)

[2] इस में ईमान वालों को उन की एक बहुत अहम ज़िम्मेदारी की तरफ़ ध्यान दिलाया गया है और वह यह है कि अपने साथ अपने घर वालों का भी सुधार और उनकी इस्लामी शिक्षा-दीक्षा (तालीम) की व्यवस्था (तदबीर) करें, ताकि यह सब नरक का ईंधन बनने से बच जायें । इसीलिए रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया है कि जब बच्चा सात साल का हो जाये तो उसे नमाज़ का हुक्म दो और दस साल की उम्र में नमाज़ में सुस्ती देखो तो उन्हें मारो । (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, किताबुस सलात) धर्मविदों (आलिमों) ने कहा है कि इसी तरह रोज़े भी उन से रखवाये जायें और दूसरे धार्मिक आदेशों (शरई अहकाम) के पालन का निर्देश (हिदायत) दिया जाये ताकि जब वह बोध (शउर) की उम्र को पहुँचें तो उन में धार्मिक बोध (शरई शउर) भी मिल चुका हो । (इब्ने कसीर)

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ تُوبُوٓا۟ إِلَى ٱللَّهِ تَوْبَةً نَّصُوحًا عَسَىٰ رَبُّكُمْ أَن يُكَفِّرَ عَنكُمْ سَيِّـَٔاتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ جَنَّٰتٍ تَجْرِى مِن تَحْتِهَا ٱلْأَنْهَٰرُ يَوْمَ لَا يُخْزِى ٱللَّهُ ٱلنَّبِىَّ وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ مَعَهُۥ نُورُهُمْ يَسْعَىٰ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَٰنِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَآ أَتْمِمْ لَنَا نُورَنَا وَٱغْفِرْ لَنَآ إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ ﴿٨﴾

८. हे ईमानवालो ! तुम अल्लाह के आगे (सच और) ख़ालिस माफ़ी माँगो[1] मुमकिन है कि तुम्हारा रब तुम्हारे पाप मिटा दे और तुम्हें ऐसी जन्नत में दाख़िल करेगा जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, जिस दिन अल्लाह (तआला) नबी (संदेष्टा) को और ईमानवालों को जो उन के साथ हैं अपमानित (रुस्वा) न करेगा, उनकी ज्योति (नूर) उन के आगे और उन के दायें दौड़ रही होगी, ये दुआयें करते होंगे कि हे हमारे रब ! हमें पूरा नूर अता कर[2] और हमें माफ़ कर दे, बेशक तू हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّبِىُّ جَٰهِدِ ٱلْكُفَّارَ وَٱلْمُنَٰفِقِينَ وَٱغْلُظْ عَلَيْهِمْ وَمَأْوَىٰهُمْ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ ٱلْمَصِيرُ ﴿٩﴾

९. हे नबी! काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से धर्मयुद्ध (जिहाद) करें, और उन पर कड़ाई करें, उन का ठिकाना नरक है, और वह वहुत बुरी जगह है।

ضَرَبَ ٱللَّهُ مَثَلًا لِّلَّذِينَ كَفَرُوا۟ ٱمْرَأَتَ نُوحٍ وَٱمْرَأَتَ لُوطٍ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَٰلِحَيْنِ فَخَانَتَاهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا

१०. अल्लाह (तआला) ने काफ़िरों के लिए नूह की और लूत की पत्नियों की मिसाल दिया है। ये दोनों हमारे बन्दों में से दो नेक बन्दों के परिवार में थीं, फिर उन्होंने उन के साथ ख़्यानत (विश्वासघात) किया[3] तो वे दोनों (भक्त) उन से

---

[1] विशुद्ध (ख़ालिस) तौबा यह है : १- जिस पाप से माफ़ी माँग रहा है उसे छोड़ दे, २- उस पर अल्लाह के सामने लज्जित (शर्मिन्दा) हो, ३- भविष्य (मुस्तक़विल) में उसे न करने का मज़बूत इरादा करे ४- और उसका संबन्ध (ताल्लुक़) बंदों के हक़ से है जिस का हक़ मारा है तो उसकी क्षतिपूर्ति (हरजाना) करे, जिस के साथ ज़ुल्म किया है उस से माफ़ी माँगे, केवल मुँह से तौवा-तौबा कर लेना कोई मायने नहीं रखता।

[2] यह दुआ ईमानवाले उस समय करेंगे जव मुनाफ़िक़ों का प्रकाश (नूर) बुझा दिया जायेगा, जैसाकि सूरह हदीद में बयान गुज़रा। ईमानवाले कहेंगे कि जन्नत में जाने तक हमारा यह नूर बाक़ी रख और इसे पूरा कर दे।

[3] यहाँ विश्वासघात (ख़्यानत) से मुराद सतीत्व (इस्मत) में ख़्यानत नहीं, क्योंकि इस बात पर 'इजमाअ' (सहमति) है कि किसी नवी की पत्नी (बीवी) वदकार नहीं होती। (फ़तहुल क़दीर) ख़्यानत का मतलब यह है कि यह अपने पतियों (शौहरों) पर ईमान नहीं लायीं, निफ़ाक़ (दुविधा) में पड़ी रहीं और उनकी हमदर्दियाँ अपनी काफ़िर जाति के साथ रहीं, जैसाकि नूह की पत्नी हज़रत नूह عليه السلام के वारे में लोगों से कहती कि यह दीवाना है और लूत की पत्नी अपने सम्प्रदाय (क़ौम) को घर में आने वाले मेहमानों की ख़वर पहुँचाती थी, कुछ लोग कहते हैं कि यह दोनों अपनी जाति के लोगों में अपने पतियों की चुगलियाँ खाती थीं।

अल्लाह की (किसी अज़ाब को) न रोक सके[1] और हुक्म दे दिया गया कि (औरतो!) नरक में जाने वालों के साथ तुम दोनों भी चली जाओ ।[2]

عَنْهُمَا مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا وَّقِيْلَ ادْخُلَا النَّارَ مَعَ الدّٰخِلِيْنَ ⑩

११. और अल्लाह (तआला) ने ईमानवालों के लिए फ़िरऔन की बीवी की मिसाल बयान की, जबकि उस ने दुआ की, हे मेरे रब! मेरे लिए अपने पास जन्नत में घर बना और मुझे फ़िरऔन से और उस के कर्म (अमल) से बचा और मुझे ज़ालिमों से मुक्ति (नजात) दे ।

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا امْرَاَتَ فِرْعَوْنَ ۘ اِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِيْ عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِيْ مِنْ فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهٖ وَنَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ⑪

१२. और (मिसाल बयान किया) मरियम पुत्री इमरान की,[3] जिसने अपने सतीत्व (इस्मत) की हिफ़ाज़त की, फिर हम ने अपनी तरफ़ से उस में प्राण (रूह) फूंके और (मरियम) ने अपने रब की बातों[4] और उस की किताबों की तसदीक़ की और वह इबादत करने वालियों में से थी ।[5]

وَمَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرٰنَ الَّتِيْٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهِ مِنْ رُّوْحِنَا وَصَدَّقَتْ بِكَلِمٰتِ رَبِّهَا وَكُتُبِهٖ وَكَانَتْ مِنَ الْقٰنِتِيْنَ ⑫

---

[1] यानी नूह और लूत दोनों अल्लाह के पैग़म्बर (संदेष्टा) थे, जो अल्लाह के क़रीबी बंदे होते हैं, फिर भी अपनी पत्नियों (बीवियों) को अल्लाह के अज़ाब से नहीं बचा सके ।

[2] यह उन से क़यामत के दिन कहा जायेगा या मौत के समय उन्हें कहा गया, काफ़िरों की मिसाल यहाँ ख़ास तौर से बयान करने का मतलब पाक पत्नियों को यह चेतावनी (तंबीह) देनी है कि वह बेशक उस रसूल के घर की शोभा (ज़ीनत) हैं, जो पूरी सृष्टि (मख़लूक़) में सब से अच्छे हैं । लेकिन उन्हें याद रखना चाहिए कि अगर उन्होंने रसूल के ख़िलाफ़ किया या उन्हें दुख पहुँचाया तो वह भी अल्लाह की पकड़ में आ सकती हैं, और अगर ऐसा हो गया तो कोई उनको बचाने वाला नहीं होगा ।

[3] हज़रत मरियम की चर्चा से उद्देश्य (मक़सद) यह बयान करना है कि यद्यपि (अगरचे) वह एक बिगड़ी जाति के बीच रहती थीं, किन्तु अल्लाह ने उन्हें दुनिया और आख़िरत की इज़्ज़त और चमत्कार से बाइज़्ज़त किया और पूरी दुनिया की औरतों पर उन्हें श्रेष्ठता (फ़ज़ीलत) दी ।

[4] रब के शब्दों (लफ़्ज़ों) से मुराद अल्लाह के धर्म-विधान (शरीअतें) हैं ।

[5] यानी ऐसे लोगों या परिवार में से थी जो फ़रमाँबर्दार, इबादत गुज़ार, सुधार और इताअत में मशहूर था, हदीस में है कि जन्नती औरतों में सब से अच्छी हज़रत ख़दीजा, हज़रत फ़ातिमा, हज़रत मरियम और फ़िरऔन की पत्नी हज़रत आसिया ﷺ हैं । (मुसनद अहमद १\२९३, मजमउज़्ज़वायेद ९\२२३, अस्सहीह लिल अलबानी न॰ १५०८) एक दूसरी हदीस में है कि मर्दों में तो मुकम्मल बहुत हुए हैं, किन्तु औरतों में मुकम्मल सिर्फ़ फ़िरऔन की पत्नी आसिया, मरियम पुत्री इमरान और ख़दीजा पुत्री ख़्वैलिद हैं, आयेशा रज़ि अल्लाहु अन्हा की प्रधानता (फ़ज़ीलत) औरतों पर ऐसे है जैसे सरीद (खाने) को तमाम खानों पर फ़ज़ीलत हासिल है । (बुख़ारी, किताबु बदइल ख़ल्क़, मुस्लिम, किताबुल फ़ज़ाइल, बाबु फ़ज़ाइलि ख़दीजा)